आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

# सुगंधा

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



43 वाँ अंक
अप्रैल, 2024 से सितम्बर, 2024

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017



कुर्सियों पर बाएं से:
सुश्री एकता (सहायक निदेशक, राजभाषा), सुश्री नाज़ली जे. शाईन (प्रधान महालेखाकार)
सुश्री ललिता शर्मा (उप महालेखाकार)

खड़े हुए बाएं से:
श्री आशीष कुमार जाँगीड़ (कनिष्ठ अनुवादक), श्री महेंद्र सिंह (वरिष्ठ अनुवादक)
सुश्री प्रियंका (कनिष्ठ अनुवादक), श्री गुरदीप कुमार (कनिष्ठ अनुवादक),

आज़ादी का अमृत महोत्सव

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

# सुगंधा

43 वाँ अंक
अप्रैल, 2024 से सितम्बर, 2024

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017

# प्रकाशन विवरण


| | | |
|---|---|---|
| **मुख्य संरक्षक** | : | **सुश्री नाज़ली जे. शाईन**<br>प्रधान महालेखाकार |
| **संरक्षक** | : | **श्री पुष्पेन्द्र गहलोत**<br>उप महालेखाकार (प्रशासन) |
| **संपादक** | : | **सुश्री एकता**<br>सहायक निदेशक (राजभाषा) |
| **संपादन सहयोग** | : | **श्री महेंद्र सिंह**<br>वरिष्ठ अनुवादक<br>**श्री गुरदीप कुमार**<br>कनिष्ठ अनुवादक<br>**सुश्री प्रियंका**<br>कनिष्ठ अनुवादक<br>**श्री आशीष कुमार जाँगीड़**<br>कनिष्ठ अनुवादक |
| **मुख पृष्ठ** | : | **स्वर्ण मन्दिर, अमृतसर**<br>(सौजन्य – इंटरनेट) |
| **अंतिम पृष्ठ** | : | **सुखना झील, चंडीगढ़**<br>(सौजन्य – इंटरनेट) |
| **अंक** | : | **43वाँ अंक** |
| **प्रकाशक** | : | **राजभाषा कार्यान्वयन समिति,**<br>कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)<br>पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017 |
| **मूल्य** | : | **राजभाषा के प्रति निष्ठा।** |
| **मुद्रक** | : | **कैपिटल ग्राफिक्स**<br>एस.सी.ओ. 133–135, सैक्टर 17–सी, चण्डीगढ़। |


**नोटः** रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

# अनुक्रमणिका


| | |
|---|---|
| प्रकाशन विवरण | 2 |
| अनुक्रमणिका | 3 |
| गृह एवं सहकारिता मंत्री का संदेश | 4–5 |
| संदेश | 6–10 |
| मुख्य संरक्षक का संदेश | 11 |
| संरक्षक का संदेश | 12 |
| संपादकीय | 13 |
| पाठकों के पत्र | 14 |


## आलेख


| | | |
|---|---|---|
| देश के विकास में ऑडिट का महत्व | अनूप पुनियाँ | 16–18 |
| नारी सशक्तिकरण | पारुल अरोड़ा | 19–20 |
| प्रेम | तुषार कांती सिन्हा | 21–22 |
| आधुनिक जीवन शैली में आध्यात्म का महत्त्व | अर्चिता | 23–24 |
| ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से राष्ट्र की समृद्धि | आयुष अरोड़ा | 25–26 |
| वेदांतः जीवन का सत्य और उद्देश्य | आयुष अरोड़ा | 27–29 |
| लोग आत्महत्या क्यों करते हैं ? | सिकन्दर कुमार | 30–39 |


## कविता


| | | |
|---|---|---|
| हट गई टेंशन, लग गई पेंशन | कुलविन्दर सिंह | 46 |
| मुख्यालय अधिकारी और मदहोशी का आलम | राजीव सूद | 47 |
| किस्सा एक कार्यालय का | गौरव बग्गा | 48 |
| हिन्दी का सफरः एक अमर कहानी | अनूप पुनियाँ | 49–50 |
| एक प्रयास | मुकेश कुमार | 51 |
| घूँट एक शराब की / मजदूरी के पैसे | तुषार कांती सिन्हा | 52 |
| ये जन्म फिर से बेकार गया | धर्म सिंह मीना | 53 |
| सरकारी कर्मचारी की व्यथा ग्रामीण परिवेश में | पायलेट मीना | 54 |
| दिल की कलम से | अवतार सिंह (तारी) | 55 |
| पिता | मानसी दुबे | 56 |


## कार्यालयीन समाचार


| | |
|---|---|
| कार्यालय में आयोजित की गई गतिविधियाँ | 57 |
| सेवानिवृत्ति और श्रद्धांजलि | 58 |

**अमित शाह**
**गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री**
**भारत सरकार**

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहरी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

**नई दिल्ली**
**14 सितंबर, 2024**

**(अमित शाह)**

सत्यमेव जयते

# संदेश



**नवनीत गुप्ता**
प्रधान महालेखाकार,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
हरियाणा

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय के द्वारा राजभाषा हिंदी की गृह पत्रिका 'सुगंधा' के 43वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । पत्रिका के निपुण संपादन एवं दक्षता के लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

विभागीय पत्रिकाएं हिंदी के प्रचार–प्रसार में एक नया मार्ग प्रशस्त कर रही हैं तथा इनके माध्यम से हम विभिन्न कार्यालयों की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय क्रियाकलापों से अवगत होते हैं। पत्रिका में गुणवत्तापूर्ण, प्रासंगिक तथा विविध विषय पर आधारित रचनाएं इसका परिचायक है कि कार्यालय के कार्मिक पत्रिका को सुदृढ़ करने में अपना कुशल एवं अनुपम योगदान दे रहे हैं। इस दिशा में पत्रिका के माध्यम से आप सबके द्वारा लम्बे समय से किए जा रहे निरंतर प्रयास सराहनीय एवं अनुकरणीय हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार–प्रसार में पत्रिका 'सुगंधा' सहायक सिद्ध होगी ।

'सुगंधा' पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन एवं सफल प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पुनः शुभकामनाएं देता हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

नवनीत गुप्ता

सत्यमेव जयते

# संदेश



**संजीव गोयल**
महानिदेशक
कार्यालय महानिदेशक,
लेखा परीक्षा, रक्षा सेवाएँ,
चण्डीगढ़

'सुगंधा' के 43वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर हार्दिक बधाई देते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। जहाँ एक ओर यह पत्रिका हिंदी राजभाषा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है वहीं दूसरी ओर लेखकों तथा पाठकों के लिए एक साँझा मंच प्रदान करने का उत्तरदायित्व भी निभा रही है। पत्रिका के संपादक मंडल का समर्पण और प्रयास हमेशा से इस पत्रिका को उत्कृष्ट बनाने की दिशा में उनकी प्रतिबद्धता का साक्ष्य रहा है।

'सुगंधा' के इस अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे विश्वास है कि जिस प्रकार इस पत्रिका के पिछले अंको ने पाठकों को नये–नये दृष्टिकोण और विचारों से अवगत कराया है उसी प्रकार आगे भी यह पत्रिका हिंदी राजभाषा को प्रोत्साहित करने की दिशा में नये–नये प्रयास करती रहेगी। संपादक मंडल एवं लेखकों की सामूहिक मेहनत और सहयोग से 'सुगंधा' का 43वां अंक राजभाषा हिंदी की सुगंध को दूर–दूर तक फैलाने में सफलता प्राप्त करें, ऐसी मेरी शुभकामना है।

संजीव गोयल

सत्यमेव जयते

# संदेश



**शैलेन्द्र विक्रम सिंह**
प्रधान महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा),
हरियाणा

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चंडीगढ़ की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के नवीनतम अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। हिंदी पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं संवर्धन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। पत्रिका में जहां एक ओर विविध विषयों पर मौलिक रचनाएं प्रकाशित होती हैं, वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिंदी के बारे में जानकारी एवं विभागीय गतिविधियों की झलकियां भी प्रस्तुत की जाती हैं।

आज संपर्क भाषा के रूप में हिंदी पूरे देश को जोड़ने का काम कर रही है। हिंदी मात्र संवाद की भाषा नहीं है बल्कि देश के आम जन तक भारत सरकार की नीतियों, जन उपयोगी योजनाओं, वैज्ञानिक तथा तकनीकी जानकरियों को पहुंचाने का सशक्त माध्यम है। यह हमारा संवैधानिक दायित्व और नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिंदी को अपने अधिकाधिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं।

आशा करता हूं कि 'सुगंधा' पत्रिका का प्रकाशित होने वाला अंक ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर होगा। पत्रिका परिवार के संपादक एवं प्रबंधक मंडल के प्रयासों की सराहना करते हुए मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

शैलेन्द्र विक्रम सिंह

सत्यमेव जयते

# संदेश



**तृप्ति गुप्ता**
महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यू. टी., चंडीगढ़

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 43 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े हुए सभी रचनाकारों, पाठकों और सह संपादक मण्डल को बधाई देती हूँ।

विभागीय पत्रिकाएं हिंदी के प्रचार–प्रसार की प्रक्रिया की रीढ़ हैं। हिंदी पत्रिकाएं विभाग से जुड़े लोगों को अपने विचार प्रकट करने और हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं। ये पत्रिकाएं विभिन्न कार्यालयों के मध्य एक सेतु का कार्य करती हैं, जिससे कार्यालयों में होने वाली गतिविधियों की समय–समय पर जानकारी मिलती रहती है। हिंदी न केवल सरकारी काम–काज की भाषा है बल्कि पूरे देश में विचार प्रस्तुत करने का सबसे सशक्त माध्यम है।

'सुगंधा' पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन एवं सफल प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पुनः शुभकामनाएं देती हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

तृप्ति गुप्ता

सत्यमेव जयते

# संदेश

**के.एस. रामुवालिया**
महानिदेशक,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
चण्डीगढ़

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 43वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। आपकी प्रतिष्ठित पत्रिका 'सुगंधा' हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक विरासत की पहचान भी रही है। यह भाषा हमारे विचारों, भावनाओं और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। आपकी पत्रिका द्वारा हिंदी भाषा को बढ़ावा देने एवं कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों को जागरूक बनाने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

मैं आपके इस प्रयास की प्रशंसा करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका निरतंर प्रगति करती रहे। मैं इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि भविष्य में यह पत्रिका हिंदी भाषा एवं संस्कृति के संवर्धन में अपना योगदान देती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित ।

के.एस. रामुवालिया

सत्यमेव जयते

# मुख्य संरक्षक का संदेश



**नाज़ली जे. शाईन**
प्रधान महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

विभागीय पत्रिका 'सुगंधा' के 43 वें अंक के प्रकाशन के लिए मैं सभी को बधाई देती हूँ। कार्यालयीन हिंदी पत्रिका में अपनी रचनाओं द्वारा कार्मिकों ने अपनी राजभाषा के प्रति समर्पण का परिचय दिया है। रचनाकारों ने हिंदी भाषा के प्रसार के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वहन करने का अच्छा प्रयास किया है। कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिकाएं न सिर्फ हिंदी के अनुपालन के संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करती हैं अपितु अन्य विभागों के मध्य सेतु का कार्य करने में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाती हैं।

विभागीय पत्रिकाओं का उद्देश्य राजभाषा के प्रति कर्मचारियों में रूचि उत्पन्न करना तथा कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना है जिसमें सुगंधा पत्रिका सदैव सफल रही है। मुझे पूर्ण विश्वास कि 'सुगंधा' पत्रिका हिंदी के प्रचार–प्रसार में मील का पत्थर साबित होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकार और संपादक मंडल एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

नाज़ली जे. शाईन

सत्यमेव जयते

# संरक्षक का संदेश



**पुष्पेन्द्र गहलोत**
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

मुझे यह जानकार अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'सुगंधा' का 43 वां अंक प्रकाशित हो रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई देता हूँ।

कार्यालयी पत्रिकाएं न केवल हिंदी का प्रचार–प्रसार करने में सहायक होती हैं अपितु कार्मिकों के सकारात्मक विचारों की अभिव्यक्ति दर्शाती हैं। 'सुगंधा' पत्रिका सदैव राजभाषा की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक के रूप में अग्रगण्य रही है। मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित रोचक रचनाएं पाठकों का ज्ञानवर्धन तथा मनोरंजन करेंगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकार, संपादन मंडल एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

पुष्पेन्द्र

पुष्पेन्द्र गहलोत

सत्यमेव जयते

# संपादकीय



मुझे 'सुगंधा' पत्रिका का 43 वां अंक आपको सौंपते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। आप सभी पाठकगणों के भरपूर सहयोग और प्रोत्साहन से यह अंक प्रकाशित हो सका है।

भारत की मुख्य भाषा हिंदी है जो सभी देशवासियों को एक साथ जोड़ती है। भारत सरकार के प्रत्येक संस्थान में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन प्रगामी रूप से सुनिश्चित करने के लिए कई प्रयास किये जा रहे हैं। हिंदी के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से कई संवैधानिक प्रावधान एवं राजभाषा नियम बनाये गए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'सुगंधा' पत्रिका के प्रकाशन से कार्मिकों में हिंदी भाषा के प्रति रुझान और बढ़ेगा और अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

मुझे हर्ष है कि कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति रुझान में लगातार वृद्धि हो रही है जिसके परिणामस्वरूप नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चंडीगढ़ द्वारा वर्ष 2023–24 के लिए "सुगंधा" पत्रिका को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस पुरस्कार के लिए सभी रचनाकार धन्यवाद के पात्र हैं।

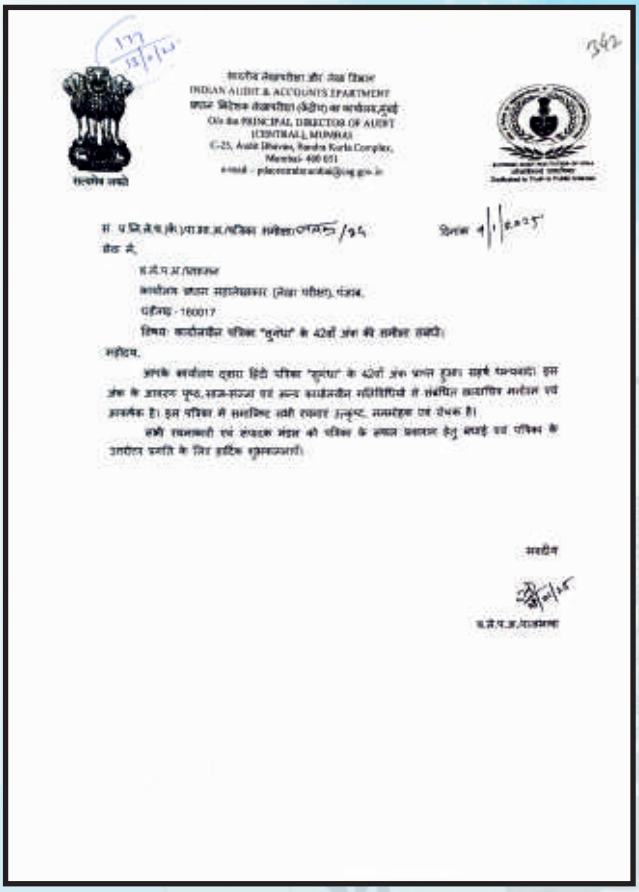
पत्रिका के बारे में विचारों और प्रतिक्रियाओं की सुखद प्रतीक्षा रहेगी ताकि आगामी अंक को बेहतर स्वरूप में आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा सके।

शुभकामनाओं सहित।

एकता

सहायक निदेशक (राजभाषा)

# पाठकों के पत्र



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), MUMBAI
C-25, Audit Bhavan, Kendra Kurla Complex, Mumbai- 400 051
e-mail - pdacentralmumbai@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

सं. प.नि.ले.प.(के.)/प्रा.अ.अ./पत्रिका समीक्षा/गुलाब/24 दिनांक 1/1/2025

सेवा में,
प.नि.ले.प.अ./प्रधान
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), पंजाब,
चंडीगढ़-160017

विषय: कार्यालयीन पत्रिका "सुगंधा" के 42वें अंक की समीक्षा संबंधी।

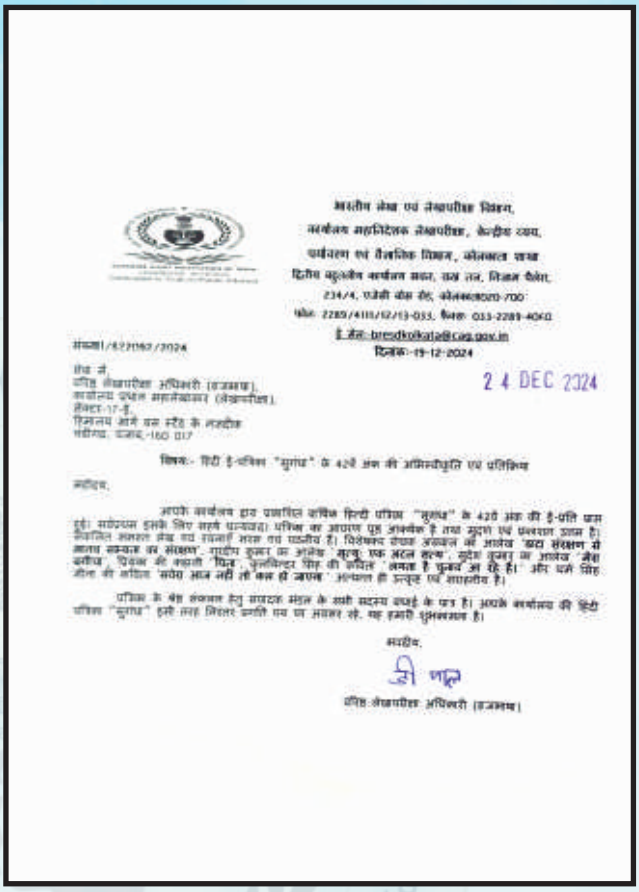
महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "सुगंधा" के 42वें अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र सराहनीय एवं आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, समसामयिक एवं रोचक हैं।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

(प.नि.ले.प.अ./प्रधानमंत्री)



भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय राजस्व,
पर्यवेक्षण एवं वैधानिक विभाग, कोलकाता सेवा
द्वितीय मंजूलेवर कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
234/4, एजेसी बोस रोड, कोलकाता-700 020
फोन: 2289/4111/12/13-033, फैक्स: 033-2289-4040
ई-मेल: hrmdkolkata@cag.gov.in
दिनांक: 19-12-2024

संख्या: I/4220160/2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
सेक्टर-17-ई,
निजामय आगे बस स्टैंड के नजदीक
चंडीगढ़, पंजाब-160 017

2 4 DEC 2024

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका "सुगंधा" के 42वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

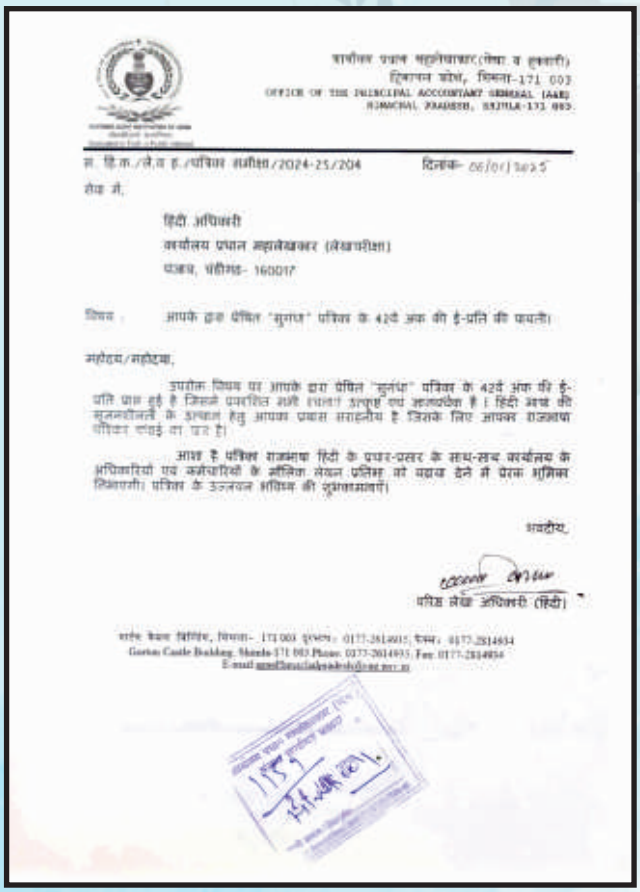
महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका "सुगंधा" के 42वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा सुरुचि एवं प्रस्तुतता प्रशंसनीय है। विशेषकर दीपक अंजवाल की आलेख 'डाटा संरक्षण में आज सक्षमता एवं संकल्प', गायत्री कुमार का आलेख 'सूतक: एक अटल सत्य', सुनीता तुलसा का आलेख 'जैसा करोगे, वैसा भरोगे' पिनाक की कहानी 'पिता', पुनविन्दर पॉल की कविता 'लगता है मुझमें आ रहे हैं।' और धर्म सिंह मीना की कविता 'संघर्ष आज नहीं तो कल हो जाएगा' अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के सफल संचालन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र है। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "सुगंधा" इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

सादर,

(नीरज अग्रवाल)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं. हि.प्र./ले.व ह./पत्रिका समीक्षा/2024-25/204 दिनांक 06/01/2025

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़- 160017

विषय : आपके द्वारा प्रेषित 'सुगंधा' पत्रिका के 42वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ती।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित "सुगंधा" पत्रिका के 42वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसके प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उन्नयन हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा पत्रिका समिति धन्यवाद के पात्र है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के आंतरिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभायेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

शुभकामनाएँ,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
त्रिपुरा, कुंजवन, अगरतला- 799 006

संख्या: हिन्दी अनुभाग/ पत्रिका प्रतिक्रिया/2024-25/822 दिनांक: 19 Dec. 2024

सेवा में,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
चंडीगढ़, पंजाब,
पिन - 160017

विषय: पत्रिका की प्राप्ति पर प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत उल्लेखनीय है कि आपके द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह-पत्रिका 'सुगंधा' की प्रति प्राप्त हुई है जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा और विन्यास अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है जिसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका में अंतर्निहित समस्त रचनायें अतीव ज्ञानवर्धनीय, रोचक और समयानुकूल तथा प्रासंगिक हैं।

आगे, आपसे यही आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी रखेंगे और राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने में अपनी सक्रिय भूमिका द्वारा सदैव हमारी को अग्रसित करते रहेंगे। इन्हीं कामनाओं के साथ संपादक मण्डल सहित समस्त पत्रिका परिवार को धन्यवाद।

सादर, धन्यवाद।

हिन्दी अधिकारी (हिन्दी अनुभाग)

# आलेख

# देश के विकास में ऑडिट का महत्व



**अनूप पुनियाँ**
**सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी**

किसी भी देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में पारदर्शिता, जवाबदेही और संसाधनों का सही उपयोग महत्वपूर्ण होता है। यह सब सुनिश्चित करने के लिए ऑडिट एक प्रभावी उपकरण है। जैसा कि महान अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने कहा था, "अमीर और शक्तिशाली लोगों के पास अपने स्वार्थ के लिए जनता के धन का दुरुपयोग करने की प्रवृत्ति होती है। इसे रोकने के लिए एक मजबूत निरीक्षण प्रणाली की आवश्यकता है।" इस लेख में, हम विस्तार से समझेंगे कि ऑडिट कैसे देश की प्रगति में योगदान देता है।

## ऑडिट का परिचय

ऑडिट का मतलब है वित्तीय, प्रशासनिक और परियोजनाओं के रिकॉर्ड की स्वतंत्र और व्यवस्थित जांच। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि संसाधनों का उपयोग ईमानदारी और दक्षता के साथ हो। महात्मा गांधी ने भी इस दिशा में कहा था, "पारदर्शिता और जवाबदेही के बिना किसी भी व्यवस्था में स्थिरता नहीं आ सकती।"

ऑडिट केवल रिकॉर्ड की जांच तक सीमित नहीं है। यह निर्णय लेने की प्रक्रिया, योजनाओं के क्रियान्वयन और संसाधनों के प्रबंधन की गुणवत्ता का भी मूल्यांकन करता है।

### 1. आर्थिक पारदर्शिता और जवाबदेही

ऑडिट देश के आर्थिक तंत्र को पारदर्शी और जवाबदेह बनाता है। यह सरकार और संगठनों के वित्तीय रिकॉर्ड की जांच कर यह सुनिश्चित करता है कि जनता का धन सही ढंग से उपयोग हो रहा है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट ने कहा था, "पारदर्शिता से जनता का विश्वास कायम रहता है, और यही किसी भी लोकतंत्र की नींव है।"

- सरकारी ऑडिटः सरकारी विभागों में ऑडिट यह सुनिश्चित करता है कि करदाताओं का पैसा सही तरीके से उपयोग हो रहा है।
- निजी क्षेत्र में ऑडिटः ऑडिट निजी कंपनियों में निवेशकों और शेयरधारकों को भरोसा दिलाता है कि उनकी पूंजी सुरक्षित है।

### 2. भ्रष्टाचार पर नियंत्रण

भ्रष्टाचार किसी भी देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा है। ऑडिट प्रणाली भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने का एक प्रभावी साधन है। अब्राहम लिंकन ने कहा था, "यदि कोई व्यवस्था पारदर्शी हो, तो भ्रष्टाचार की कोई गुंजाइश नहीं रहती।"

- धन के दुरुपयोग को रोकनाः ऑडिट यह सुनिश्चित करता है कि परियोजनाओं और योजनाओं में धन का उपयोग सही ढंग से हो रहा है।

- जवाबदेही की स्थापना: जब अधिकारियों को पता होता है कि उनके कार्यों की जांच होगी, तो वे अधिक जिम्मेदारी से काम करते हैं।

### 3. विकास परियोजनाओं की निगरानी

सरकारी योजनाओं और परियोजनाओं की निगरानी में ऑडिट की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। जॉन एफ. केनेडी ने कहा था, "जिम्मेदार सरकार वह है, जो अपने कार्यों का हिसाब देने में सक्षम हो।"

- योजनाओं का कार्यान्वयन: चाहे सड़क निर्माण हो, शिक्षा में सुधार हो या स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, ऑडिट यह सुनिश्चित करता है कि सभी कार्य समय पर और गुणवत्ता के साथ पूरे हों।
- संसाधनों का उचित उपयोग: संसाधनों की बर्बादी को रोककर ऑडिट विकास परियोजनाओं को सफल बनाता है।

### 4. विदेशी निवेश को बढ़ावा

एक मजबूत ऑडिट प्रणाली विदेशी निवेश को आकर्षित करती है। वॉरेन बफेट ने कहा था, "निवेशक हमेशा उन जगहों पर भरोसा करते हैं, जहां पारदर्शिता और ईमानदारी होती है।"

- आर्थिक विश्वास: ऑडिट यह दिखाता है कि देश की वित्तीय प्रणाली विश्वसनीय और पारदर्शी है।
- वैश्विक रैंकिंग: पारदर्शिता और जवाबदेही देश की वैश्विक प्रतिष्ठा को मजबूत करती है, जिससे निवेशकों का विश्वास बढ़ता है।

### 5. जनकल्याण में सुधार

ऑडिट का अंतिम उद्देश्य जनता के कल्याण को सुनिश्चित करना है। नेल्सन मंडेला ने कहा था, "किसी भी समाज की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह अपने कमजोर नागरिकों की भलाई के लिए कितना पारदर्शी और जवाबदेह है।"

- शिक्षा और स्वास्थ्य योजनाएं: ऑडिट यह सुनिश्चित करता है कि इन क्षेत्रों में आबंटित धन सही तरीके से उपयोग हो।
- सामाजिक सुरक्षा: सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में किसी भी प्रकार की अनियमितता को उजागर कर ऑडिट उन्हें अधिक प्रभावी बनाता है।

### 6. संस्थागत दक्षता में सुधार

ऑडिट किसी भी संस्थान की दक्षता का मूल्यांकन करता है। यह खामियों को उजागर करने और सुधार के सुझाव देने में सहायक है। पीटर ड्रकर ने कहा था, "जो मापा जा सकता है, वही प्रबंधित किया जा सकता है।"

- प्रबंधन में सुधार: ऑडिट संस्थानों को अपनी योजनाओं और प्रक्रियाओं को सुधारने में मदद करता है।
- खर्च पर नियंत्रण: यह अनावश्यक खर्चों को रोकता है और संसाधनों का कुशलता से उपयोग सुनिश्चित करता है।

**चुनौतियां और सुधार की आवश्यकता:**

- हालांकि ऑडिट प्रणाली देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन इसमें कुछ चुनौतियां भी हैं।
- सीमित संसाधन: ऑडिट करने के लिए प्रशिक्षित पेशेवरों और तकनीकी उपकरणों की कमी।
- देरी: समय पर ऑडिट न होने से परियोजनाओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- राजनीतिक हस्तक्षेप: ऑडिट की निष्पक्षता को कभी–कभी राजनीतिक दबाव प्रभावित करता है।

**सुझाव:**

- आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके ऑडिट प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।
- स्वतंत्र और निष्पक्ष ऑडिटिंग संस्थानों को सशक्त किया जाना चाहिए।

**निष्कर्ष:**

जैसा कि थॉमस जेफरसन ने कहा था, "सरकार को तभी सशक्त माना जा सकता है, जब वह अपने कार्यों का हिसाब देने में सक्षम हो।" ऑडिट देश के विकास में एक अनिवार्य भूमिका निभाता है। यह पारदर्शिता, जवाबदेही और संसाधनों के सही उपयोग को सुनिश्चित करता है।

यदि ऑडिट प्रक्रिया को सख्ती से लागू किया जाए, तो यह भ्रष्टाचार को नियंत्रित करेगा, योजनाओं की प्रभावशीलता बढ़ाएगा और जनता के कल्याण को सुनिश्चित करेगा। एक मजबूत ऑडिट प्रणाली ही समृद्ध और स्थिर भारत के निर्माण में सहायक हो सकती है ।



# नारी सशक्तिकरण



पारुल अरोड़ा
आशुलिपिक

नारी एक जटिल और बहुआयामी शक्ति है। जिसे हम केवल बाहरी रूपों में सीमित कर देते हैं। यह केवल शारीरिक रूप या पारंपरिक भूमिकाओं से कहीं अधिक हैं। नारी का अस्तित्व एक ऐसी ऊर्जा है जो जीवन के हर पहलू में छुपी होती है। एक ऐसी शक्ति जो ना केवल समाज के निर्माण में सहायक होती है बल्कि मानवता की गहरी समझ को भी उजागर करती है। जब हम नारी की भूमिका और अस्मिता को समझने की कोशिश करते हैं तो हमें यह देखना होता है कि वो कितनी अनमोल है न केवल समाज के दृष्टिकोण से बल्कि स्वयं के दृष्टिकोण से भी यह शक्ति, यह अस्तित्व बाहरी पहचान तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह एक आंतरिक ऊर्जा है जो हर परिस्थिति में अपनी उपस्थिति महसूस करवाती है। जब हम द्रौपदी, मंथरा, अहिल्या, यशोधरा इत्यादि अनेक नारियों के जीवन की गाथा या उनके द्वारा किये गये क्रियाकलापों की तरफ देखते हैं तो हमें उनके जीवन से एक गहरी समझ प्रतिध्वनित होती दिखाई देती है। जब महाभारत में द्रौपदी का अपमान हुआ तो द्रौपदी द्वारा किया गया विरोध केवल एक व्यक्ति का विरोध नहीं था बल्कि समाज की पूरी व्यवस्था के विरुद्ध एक आन्दोलन था और न ही केवल यह द्रौपदी का अपमान था बल्कि पूरी नारी जाति का अपमान था द्रौपदी द्वारा किया गया विरोध इस बात का सूचक था कि नारी को कभी भी उसकी गरिमा से वंचित नहीं किया जा सकता। उसने यह सिद्ध किया कि नारी की शक्ति उसकी शारीरिक शक्ति न होकर उसकी आत्मिक व बौद्धिक शक्ति में है। उसी प्रकार सीता का जीवन आत्मिक व बौद्धिक शक्ति से पूर्ण था। सीता ने न केवल एक आदर्श पत्नी की भूमिका निभाई बल्कि उन्होंने समाज में धर्म के प्रति अपनी आस्थाओं को भी प्रकट किया। राम ने जब सीता को वनवास दिया तब सीता ने न केवल यह साबित किया कि नारी का बल केवल उसकी शारीरिक उपस्थिति में नहीं बल्कि उसकी आतंरिक शक्ति, उसकी भक्ति और उसके सत्य के प्रति अडिग विश्वास में है। यह उन असाधारण महिलाओं के बारे में जानकारी थी परन्तु हम अपने आसपास या अपने परिवार में अपनी माताओं, नानियों, दादियों को देखतें हैं जिन्होंने कितने योजनाबद्ध तरीके से अपने जीवन को जिया और अपने चेहरे पर शिकन तक नहीं आने दी। उन नारियों के सशक्तिकरण की बात न करना, नारियों का अपमान है।

महात्मा गाँधी जी नारी को आत्मनिर्भर बनाने के पक्षधर थे। उनका विचार था नारी खुद कमाने लगेगी तो पुरुष पर निर्भरता कम हो जाएगी और वे अपने परिवार और अपनी इच्छाओं का उपभोग कर सकेगी। गांधी जी के अनुसार एक सशक्त महिला गुलामी से आजाद होती है। परिवार, समाज और राष्ट्र द्वारा किये जाने वाले मानसिक, शारीरिक एवं नैतिक शोषण से स्वतंत्र होती है उन्हें यह अधिकार होता है कि वह अपनी इच्छानुसार पूर्णतः अपना आध्यात्मिक, सामाजिक, बौद्धिक, कलात्मक व राजनैतिक विकास कर सके। अपने पति व ससुर के प्रति उस प्रकार का सम्मान प्रदर्शित न करने पर जैसा कि वे चाहते हैं वैसा न करने पर, सीधा सीधा आक्रमण उसके चरित्र पर किया जाता है और उसे शर्मिंदा किया जाता है। यह उसके प्रति नैतिक दुर्व्यवहार है।

महात्मा गाँधी जी ने कहा था– "महिलाओं के अधिकारों के मामले में मैं कोई समझौता नहीं कर सकता। मैं ऐसा मानता हूँ कि महिलाओं को कोई ऐसी कानूनी रुकावट नहीं होनी चाहिए जो पुरुषों को झेलनी पड़ती

है। जब तक भारतवर्ष की महिलाएं पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर धार्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक मामलों में बराबरी से अपनी भूमिका का निर्वाह नहीं करती हैं तब तक भारतवर्ष के भाग्य का उदय नहीं हो सकता"

एक महिला उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना एक पुरुष, दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों को समान अवसर व समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए जो कि हमारे संविधान ने प्रदान किये हैं, परन्तु समान अवसर के बावजूद महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बहुत कम है। जब तक 33 प्रतिशत या 50 प्रतिशत महिलाएं संसद में नहीं पहुचेंगी तब तक सही मायने में हम महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर पाएंगे।

दूसरा सबसे बड़ा सम्बल है– शिक्षा। भारत सरकार के पिछले 70 वर्षों के संघर्ष और नीति निर्धारण का ही परिणाम है कि आज महिलाएं पुरुषों के समान हैं। महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं परन्तु इतने विकास के बाद भी आये दिन महिलाओं का मानसिक, शारीरिक व बौद्धिक शोषण किया जाता है। हमारी सरकार को ऐसे कानून बनाने की आवश्यकता है जिन पर फैसला त्वरित किया जा सके और अभियुक्त की सही पहचान होने पर त्वरित सजा का प्रावधान हो। साथ ही मैं महिलाओं के साथ होने वाले अनाचार के लिए कुछ हद तक स्वयं को जिम्मेदार मानती हूँ। कोमल हृदय की महिलायें बहुत ही जल्दी धार्मिक अन्धविश्वास व ढोंगी बाबाओं के चक्कर में पड़ जाती हैं। ये ढोंगी कभी रोग ठीक करने तो कभी घर की सुख–शांति के लिए इन महिलाओं का नैतिक शोषण करते हैं।

यदि हम भारतीय महिलाओं का सशक्तिकरण चाहते हैं तो हमें उन्हें आर्थिक, सामाजिक, नैतिक व तार्किक रूप से सशक्त बनाना पड़ेगा। जब तक हम महिलाओं को तार्किक और नैतिक रूप से शिक्षित नहीं करते तब तक महिलायें कभी स्वयं के द्वारा तो कभी परपुरुषों के द्वारा शोषित होती रहेंगी।

अतः भारतीय महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए ऐसी नीति निर्धारित की जाए, जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त बनें और ऐसी शिक्षा दी जाए जो उनको तार्किक बनाये, जिससे वे अंधविश्वासों से बाहर निकल सकें और सुनहरे अवसरों का लाभ उठा सकें।



# प्रेम



तुषार कांती सिन्हा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रेम एक आकर्षण है, एक खिंचाव है। एक माँ अपने बेटे को निमंत्रण दे कर नहीं बुलाती है,उसे आने का आदेश देती है, जब बेटा उस आदेश को नहीं मानता तो विवश हो बिलखती है, विलाप करती है,यही प्रेम की पराकाष्ठा है। सीमा पर लड़ रहा एक फौजी प्रतिदिन अपनी माँ को एक रुपया भेजा करता था, खर्ची के लिये नहीं बल्कि इस बात का आभास दिलाने के लिये कि आज के दिन में उसका बेटा जिंदा है। मैं कुछ न कुछ लिखता रहता हूँ, कुछ लोग पढ़तें हैं कुछ नहीं भी पढ़ते हैं, कुछ लोग इग्नोर कर जाते हैं। प्रेम आशा है, प्रेम जिज्ञासा है। मैं करीब पंद्रह दिनों से बीमार चल रहा था, यहाँ से 1500 किलो मीटर पर मेरे एक मित्र रहते हैं,सहसा एक दिन उनका कॉल आया, बड़े सशंकित शब्दों में पूछ रहे थे कि तुषार जी आप का क्या हाल है, पंद्रह दिनों से आपको ऑन लाइन नहीं देख, मन विचलित हो गया इसलिए फोन किया था। उस व्यक्ति से मेरा कोई पारिवारिक संबंध नही है पर प्रेम की जकड़ जिज्ञासा बन गई। हर व्यक्ति की अपनी दिनचर्या है। मैं सुबह मेवे का नाश्ता करता हूँ, बहुत दिनों बाद मैं अपने परिजन से मिलने गया, शायद प्रेम ने मिलने को विवश कर दिया था, वहाँ उसने मुझे नाश्ते मे नमक तेल और मक्के की रोटी दे दी, थोड़ी देर के लिए मैं विस्मय में पड़ गया, पर जैसे ही मैंने रोटी का पहला निवाला मुँह में रखा, उससे काजू का स्वाद आने लगा, यह आत्मीयता और प्रेम रस की मिठास थी। बहुत गरीब आदमी था बेचारा, पर मन से बहुत अमीर था।

सुदूर बसे जब कोई परिजन अपने को मन से याद करता है तो सपने में दोनों का मिलन हो जाता है। प्रेम न तो आमन्त्रण खोजता है न निमंत्रण, मिलने की इच्छा के आगे ? व्यक्ति बिन बुलाये मेहमान की तरह होता है जो अपनी और मेजबान की हर असुविधा का सहभागी बन बैठता है, प्रेम के विरासत में मान सम्मान की शरारत मौन हो जाती है। वहाँ सुविधा और दुविधा देखी नहीं जाती है। प्रेम अंतर्मन की व्यथा है, इसमें अभाव, भाव दबाव या प्रभाव की शक्ति नहीं चलती। इस भाग दौड़ की दुनिया में कब कौन कहाँ जाता है, कौन आता है, किसको कब खबर होती है, प्रेम की परिसीमा को लाँघते वक्त एक बार मिलने की आशा प्रबल हो हृदय को उद्वेलित कर देती है, पर वहीं आत्म सम्मान, अहंकार और अकड़ दीवार बन खड़ी हो जाती है। आत्मा को चोटिल कर देती है, पर प्रेम शाश्वत है, अमर है वह पुनीत और सत्य है। वह सपने में भी आ कर आपसे मिल लेगा, दुनिया की कोई शक्ति उसे मिलने से रोक नहीं पायेगी। प्रेम अपने अस्तित्व को उजागर कर ही देता है।

**"हो जाता है प्रेम प्रदर्शित कभी यादगार बन कर, कभी आंसूओं की धार बन कर"**

प्रेम एक अनुभूति है, एक अनुभव है। ईश्वर सशरीर नजर नहीं आते पर जब लोग उनकी प्रतिमा से प्रेम करते हैं तब उस मूर्ति में उसे ईश्वर नजर आता है। आपने देखा होगा कई लोग लड्डू गोपाल की मूर्ति अपने साथ लिए सफर करते हैं सबसे पहले लड्डू गोपाल को खाना खिलाते हैं फिर खुद खाते हैं। सर्दी में उनके लिए गर्म कपड़े लाते हैं तो गर्मी में पंखे के नीचे रखते हैं, यह प्रेम का शाश्वत रूप है। किसी को प्रकृति से इतना प्रेम हो जाता है कि वह अपने वातानुकूलित घर का त्याग कर पर्वत की कंदराओं में या किसी नदी के किनारे जीवन व्यतीत कर देता है, इस तरह किसको किससे और कहाँ प्रेम हो जायेगा यह कोई नहीं कह सकता। प्रेम किया नहीं जाता, हो जाता है। एक पालतू तोते को बहुत दिनों तक पालने के बाद जब उसका मालिक उसे अपने घर से भगा देता है तो वह तोता फिर से उसी घर में लौट आता है। प्रेम से वशीभूत उस तोते को आकाश में उड़ने से ज्यादा सुख उसी पिंजरे मे कैद रहने मे आता है जहाँ से उसे उड़ा दिया गया था, यह प्रेम का वशीकरण है। प्रेम में सिर्फ आकर्षण ही नही वशीकरण भी है। प्रेम एक प्रयोग है, प्रेम का प्रयोग कर आप किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं। प्रेम की अपनी नजर है, कहीं प्रेम की नजर धन पर है, कहीं मन पर तो, कहीं तन पर। प्रेम

एक उमंग है, प्रेम एक तरंग है। प्रेम एक बिंदु से बढ़ते–बढ़ते अपनी परिधि का विस्तार इस हद तक कर लेता है कि मानव के सम्पूर्ण जीवन को अपने परिधि में समेट लेता है। मनुष्य प्रेम को पाने की ललक में अपने अस्तित्व को ही खो देता है और प्रेम की तरंग में समाहित हो मृत्यु की आगोश में समा जाता है, पर प्रेम अप्राप्य और असंतृप्त रह जाता है। इस तरह प्रेम सुलभ नहीं है। प्रेम एक रोग है, जिसे प्रेमरोग हो जाता है वो पागल या दीवाना हो जाता है, दुनिया की सारी खुशियाँ, नेमतें, सारे रिश्ते को भूल कर सिर्फ प्रेम के पल्लू से बंध जाता है। प्रेम के प्रकाश से उसे प्रेमिका के अंग प्रत्यंग से प्रेम हो जाता है और कहता कि तेरी आँखों के सिवा दुनिया में रखा क्या है। प्रेम एक अहसास है जो दिल में उठता है और मस्तिष्क पर अपना डेरा जमा लेता है। प्रेम इस जटिल रोग से ग्रसित लोगों द्वारा अप्रत्याशित घटनाओं को अंजाम दे देता है। प्रेम रोग की यदि कोई दवा है तो वह प्रेम ही है।

प्रेम हँसाता भी तो कभी रुलाता भी है, पर विषम स्थिति में भी प्रेम अपनी उपस्थिति उजागर कर देता है, उस वक्त वो सारे बंधनों को तोड़ कर आगे बढ़ जाता है। एक लड़की किसी लड़के से अत्यधिक प्रेम करती थी, दुर्भाग्यवश उसके प्रेमी की शादी किसी और लड़की से हो जाती है। प्रेम का जुनून सर पर इस कदर चढ़ा कि बेचारी शगुन के 501 रुपये लेकर वर मंडप में चली आती है। दोनों प्रेमी–प्रेमिका एक दूसरे को ललचाई नजरों से देखते हैं। प्रेमिका की आँखें आँसूओं से भर आती हैं, पर वो आँसू को गिरने नहीं देती, आँखों के कोने में छुपा लेती है। उसे लगता है कि शुभ मुहूर्त में रोना ठीक नहीं। मंच से उतर आती है, शगुन के पैसे उसके हाथों में ही रह जाते हैं। प्रेम रोने को विवश कर देता है वहीं प्रेम आँखों के आँसू को छलकने से रोक देता है। प्रेम का यह परिदृश्य मनुष्य को किंकर्तव्यविमूढ़ कर देता है। वह न तो खुल कर हंसने देता है, न रोने। प्रेम एक मानसिक बीमारी है। अपने प्रेमी की खुशी के लिये उस अभागे क्षण को वो भी सहर्ष स्वीकार कर लेती है कि उसके रोने से उसका प्रेमी भी रो पड़ेगा। प्रेम करने के लिये बहुत साहस और त्याग की जरूरत होती है। प्रेम तन से तन का मिलन नहीं अपितु मन से मन का मिलन होता है, उस प्रेम को निभाने में पीड़ा होती है, कष्ट का सामना करना पड़ता है। निःस्वार्थ प्रेम जीवन के अनंत दुःख का कारण बन जाता है, पर उस प्रेम की सीमा छोटी नहीं होती है। हिचकियों और सिसकियों के बीच प्रेम फलता–फूलता रहता है। प्रेम पा लेने की खुशी है, न पाने का गम है, बच्चे का माँ की गोद में आते ही माँ की छाती से दूध की धार फूट पड़ती है, यह प्रेम की अविरल धारा है। प्रेम यदि सबसे मंहगा सुख है तो सबसे गहरा दुःख भी है। खुद को मिटा कर प्रेम करना पड़ता है। कई बार मोबाइल देखते वक्त एक ऐसा नंबर आ जाता जो अब इस दुनिया में नहीं है, कब के दुनिया से विदा हो गए हैं, मन में आता है कि अब इस नंबर की क्या जरूरत है ? चलो इसे डिलीट कर देते हैं पर डिलीट करते वक्त अंगुलियाँ थम जाती हैं। मन अतीत में खो जाता है और दिल को इस कदर झकझोर देता है कि उस मरे हुए आदमी की तस्वीर या पुरानी वीडियो को देखने का मन करने लग जाता है। उस व्यक्ति की एक पुरानी वीडियो को देख आँखों से आंसू निकल पड़ता है, यह प्रेम है, जो मृत आत्मा को देख कर अश्रु ग्रंथि को जागृत कर देता है और आँखों से आंसुओं की दो बूँदे निकल पड़ती हैं। मनुष्य नश्वर है पर प्रेम अमर है वह कभी नहीं मरता। प्रेम और क्रंदन का श्रोत एक ही है, किसी के करूण क्रंदन को देख प्रेम जाग उठता है तो कभी अपार प्रेम से रोना आ जाता है। जब किसी इंसान को प्रेम हो जाता है तो प्रेम उसके जीने की वजह बन जाता है तो वही प्रेम मरने का कारण भी बन जाता है। आये दिन कितनी हत्याएं प्रेम के कारण हो रही हैं और प्रेम के कारण समाज में कितनी रुस्वाइयाँ होती हैं पर फिर भी दो प्रेमी, प्रेम को त्यागने को तैयार नहीं होते हैं। इस तरह प्रेम अटूट है मनुष्य मर जाता है, प्रेम अमर रहता है। किसी ने पूछा प्रेम क्या है, ''उसने कहा जो दूसरे का हो कर भी अपना है, वही प्रेम है।''

# आधुनिक जीवन शैली में आध्यात्म का महत्त्व



**अर्चिता**
**सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी**

मनुष्य सब जीवों में से सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। वह अपनी समझ का व्यापक रूप से सदुपयोग करके जीवन की गतिविधियों को आधुनिकता के मार्ग पर ले जाने में सक्षम है ।

इसमे कोई संदेह नहीं है कि आज विश्व भर मे विज्ञान, अनुसंधान एवं नई तकनीकों ने जीवन को सरल और सुलभ बनाने में अहम भूमिका निभाई है। परंतु इसके साथ ही आधुनिक जीवन की निरंतर बढ़ती प्रतिस्पर्धा, कार्यभार, सामाजिक दबाव और जीवन की गति ने लोगों को मानसिक और शारीरिक रूप से थका दिया है। मनुष्य के जीवन में भौतिक सुखों का महत्व बढ़ गया है अथवा उसका लक्ष्य भी भौतिक उपलब्धियों की तरफ केंद्रित हो गया है ।

ऐसे में, आध्यात्मिकता या आध्यात्म का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया है। आध्यात्मिकता केवल धार्मिक आस्थाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आंतरिक शांति, आत्मज्ञान और मानसिक संतुलन की ओर मार्गदर्शन करती है।

ध्यान, योग, साधना और आत्मनिरीक्षण जैसे आध्यात्मिक अभ्यास व्यक्ति को मानसिक शांति प्रदान करते हैं। जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा था, ''शांति आंतरिक होती है, यह बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करती।'' यह विचार आज के समय में अत्यधिक प्रासंगिक है, क्योंकि बाहरी दुनिया में शांति की खोज करना अब असंभव सा प्रतीत होता है, लेकिन आंतरिक शांति की साधना संभव है।

आध्यात्मिकता व्यक्ति में करुणा, सहानुभूति और समझदारी जैसे गुणों को विकसित करती है। ये गुण सामाजिक रिश्तों को मजबूत बनाते हैं। जब व्यक्ति आत्मा की गहराई में उतरता है, तो वह दूसरों के प्रति अधिक सहिष्णु और समझदार बनता है। ''जो दूसरों की भलाई चाहता है, वही सच में सुखी है,'' यह विचार आध्यात्मिक दृष्टिकोण से जीवन के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है। इस प्रकार, आध्यात्मिकता व्यक्ति को न केवल आत्मिक शांति प्रदान करती है, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक जीवन में भी सामंजस्य स्थापित करती है।

आज विश्व भर में भारतीय संस्कृति को अपनाया गया है अथवा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस आदि कार्यक्रमों से इसको बढ़ावा दिया गया है। जैसे कि कहा गया है कि एक स्वस्थ मन का विस्तार एक स्वस्थ शरीर में होता है। योग, प्राणायाम और ध्यान जैसे आध्यात्मिक अभ्यास शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं। इन क्रियाओं से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है और मानसिक तनाव में भी कमी आती है। आज के समय में जहां लोग शारीरिक स्वास्थ्य को लेकर बहुत सजग हैं, वहीं आध्यात्मिकता इसे और भी प्रभावी तरीके से सशक्त बनाती है।

आज के समय में भौतिक सुख पा लेने के बाद भी मनुष्य संतोष का अभाव महसूस करता है। संतोष की भावना आत्मिक विकास की कुंजी है, जो जीवन के संघर्षों और कठिनाइयों में भी स्थिरता बनाए रखती है। आध्यात्म एक संतोषजनक मार्ग का सुगम उपाय है। भौतिक दुनिया में हम जितना अधिक प्राप्त करते हैं, उतनी ही अधिक इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं। इसके विपरीत, आध्यात्मिकता हमें यह सिखाती है कि जितना हम कम चाहते हैं, उतना ही अधिक संतुष्ट रहते हैं।

आध्यात्मिक जीवन का एक और महत्वपूर्ण पहलू प्रेम और सेवा है। जब हम दूसरों के प्रति करुणा और

प्रेम का अभ्यास करते हैं, तब हम अपनी आत्मा में गहरी शांति और संतोष का अनुभव करते हैं।

आधुनिक जीवन शैली से ग्रस्त प्राणी अपनी ज्यादातर समस्याओं की वजह दूसरों को मानता है। ऐसे में आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता है, जिसमें व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, आस्थाओं और कार्यों का गहन विश्लेषण करता है। यह आत्म–साक्षात्कार की दिशा में पहला कदम होता है।

आध्यात्म के क्षेत्र में श्री योगानन्द परमहंस जी, आध्यात्मिक गुरु को व्यापक रूप से सम्मानित किया जाता है जिन्होंने योग क्रिया के बारे में विश्व को अवगत करवाया। वे कहते थे कि "आध्यात्मिकता का मूल उद्देश्य आत्मा का साक्षात्कार करना है, जो कि सत्य, प्रेम और अनंत शांति का स्त्रोत है।

आध्यात्मिकता के माध्यम से हम अपने जीवन को सार्थक और संतुष्ट बना सकते हैं। इस प्रकार, आधुनिक जीवन में आध्यात्मिकता को अपनाकर जीवन को एक नवीन रूप दिया जा सकता है जो न केवल व्यक्तिगत सुख और शांति को बढ़ावा देता है, बल्कि सामाजिक और मानसिक सुधार की दिशा में भी सकारात्मक योगदान देता है।



# ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से राष्ट्र की समृद्धि



आयुष अरोड़ा
लेखापरीक्षक

ईमानदारी और सत्यनिष्ठा एक समृद्ध समाज की आधारशिला है, खास तौर पर भारत जैसे विविधतापूर्ण और गतिशील राष्ट्र में। जैसे–जैसे देश प्रगतिशील होता जाता है, ईमानदारी को बढ़ावा देने का महत्व और भी स्पष्ट होता जाता है। भारत में, जहाँ विविधता व्याप्त है और जटिलताएँ प्रचुर हैं, ईमानदारी एक एकीकृत शक्ति के रूप में कार्य करती है। इस लेख से इस बात का पता लगता है कि ईमानदारी की संस्कृति किस प्रकार राष्ट्र की समृद्धि का कारण बन सकती हैं तथा ऐतिहासिक संदर्भ, वर्तमान चुनौतियों और व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से इसके महत्व की जांच करता है।

## ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत का समृद्ध इतिहास ऐसे नेताओं से भरा पड़ा है जिन्होंने ईमानदारी को अपनाया। महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों ने एक नैतिक ढांचा स्थापित किया जिसने स्वतंत्रता और सामाजिक परिवर्तन के लिए आंदोलनों को भी प्रेरित किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जो मूल्य स्थापित किए गए, वे आज भी प्रासंगिक हैं तथा हमें याद दिलाते हैं कि सत्यनिष्ठा केवल एक व्यक्तिगत गुण नहीं, बल्कि एक सामूहिक जिम्मेदारी है।

## वर्तमान चुनौतियाँ

1. भ्रष्टाचार और उसका प्रभाव – ईमानदारी पर ऐतिहासिक जोर के बावजूद, आधुनिक भारत को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, खास तौर पर भ्रष्टाचार का। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक 2022 के अनुसार, भारत 180 देशों में 85वें स्थान पर है, जो सुधारों की सख्त जरूरत को दर्शाता है।

2. विश्वास का क्षरण – कदाचार के उदाहरण संस्थाओं में जनता के विश्वास को खत्म करते हैं। उदाहरण के लिए, राजनीतिक फंडिंग और कॉर्पोरेट प्रभाव के इर्द–गिर्द चल रही बहस पारदर्शिता और नैतिक शासन की तत्काल आवश्यकता को उजागर करती है। 2जी स्पेक्ट्रम मामला और कॉमनवेल्थ गेम्स घोटाला इस बात की स्पष्ट याद दिलाता है कि ईमानदारी की कमी राष्ट्रीय प्रगति को कैसे पटरी से उतार सकती है।

## आगे का रास्ता

1. शिक्षा एवं जागरूकता – ईमानदारी को बढ़ावा देने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सभी शैक्षणिक स्तरों पर पाठ्यक्रम में नैतिकता को शामिल करने से भावी पीढ़ियों में नैतिक मूल्यों का संचार हो सकता है। केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा शुरू की गई 'ईमानदारी प्रतिज्ञा' जैसी पहल नागरिकों को नैतिक व्यवहार के लिए प्रतिबद्ध होने के लिए प्रोत्साहित करती है।

2. प्रौद्योगिकी की भूमिका – प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने से पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ सकती है। डिजिटल इंडिया प्रोग्राम, जैसी ई–गवर्नेंस पहलों का उद्देश्य सरकारी प्रक्रियाओं को अधिक सुलभ और पारदर्शी बनाकर भ्रष्टाचार को कम करना है। सरकारी परियोजनाओं की वास्तविक समय पर निगरानी (Real & time tracking) भ्रष्ट आचरण को रोक सकती है।

3. नागरिक सहभागिता को बढ़ावा देना – ईमानदारी को बढ़ावा देने के लिए नागरिक भागीदारी महत्वपूर्ण है। जमीनी स्तर के आंदोलन और गैर सरकारी संगठन पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नागरिकों को सार्वजनिक प्राधिकरणों से सूचना प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाने में सूचना का अधिकार अधिनियम (आरटीआई) की सफलता ईमानदारी को बढ़ावा देने में नागरिक भागीदारी की शक्ति का उदाहरण है।

### राष्ट्रीय समृद्धि पर अखंडता का प्रभाव




चित्र – यह आरेख दर्शाता है कि केन्द्र में स्थित सत्यनिष्ठा राष्ट्रीय समृद्धि के विभिन्न पहलुओं को किस प्रकार प्रभावित करती है।

### मुखबिरों की भूमिका

ईमानदारी को बनाए रखने में मुखबिरों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। स्वर्णिम चतुर्भुज राजमार्ग परियोजना में भ्रष्टाचार को उजागर करने वाले श्री सत्येंद्र दुबे का मामला नैतिक प्रथाओं के लिए खड़े होने के जोखिम और लाभों को दर्शाता है। उनके बलिदान ने भारत में मुखबिरों के लिए मजबूत सुरक्षा की आवश्यकता पर चर्चा को जन्म दिया।

### निष्कर्ष और कार्रवाई का आह्वान

भारत की समृद्धि के लिए ईमानदारी की संस्कृति आवश्यक है। यह विश्वास को बढ़ावा देती है, जवाबदेही को बढ़ावा देती है और आर्थिक विकास और सामाजिक सद्भाव के लिए अनुकूल वातावरण बनाती है। जैसे–जैसे राष्ट्र भ्रष्टाचार और नैतिक दुविधाओं से उत्पन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है, ईमानदारी के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता सर्वोपरि होगी। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर आइए हम ईमानदारी को बढ़ावा देने में अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक भूमिका पर विचार करें। हममें से हर एक के पास ईमानदारी की संस्कृति में योगदान देने की शक्ति है।

**"राष्ट्र निर्माण केवल वर्तमान के बारे में नहीं है, यह भविष्य के बारे में भी है, और यह ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए।"–सरदार वल्लभभाई पटेल**

# वेदांतः जीवन का सत्य और उद्देश्य



आयुष अरोड़ा
लेखापरीक्षक

**परिचयः जीवन के गहरे प्रश्न**

''मैं कौन हूँ? जीवन का उद्देश्य क्या है? इस ब्रह्मांड में मेरा स्थान क्या है? क्या है इस दुनिया का असली सत्य?'' ये सवाल हर इंसान ने कभी न कभी अपने जीवन में जरूर पूछे होंगे। हम जैसे–जैसे बड़े होते जाते हैं, इन सवालों के जवाब हमें कहीं न कहीं चाहिए होते हैं। कुछ लोग इन सवालों को नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन एक गहरी इच्छा हमेशा बनी रहती है – अपने अस्तित्व का सही अर्थ समझने की।

यह सवाल हमें उस शाश्वत सत्य की ओर ले जाता है, जिसे वेदांत कहा जाता है। वेदांत संस्कृत शब्द 'वेद' (ज्ञान) और 'अंत' (अंतिम) से निकला है, अर्थात 'ज्ञान का अंतिम उद्देश्य' या 'ज्ञान की चरम सीमा'। वेदांत जीवन के गहरे रहस्यों को समझने की एक प्रक्रिया है, जो हमें अपने वास्तविक स्वरूप का एहसास कराती है। यह सिखाता है कि हम जो कुछ भी हैं – शरीर, मन और भौतिक दुनिया – उससे कहीं अधिक हैं। हम एक शाश्वत चेतना हैं, जो ब्रह्मांड के हर कण में व्याप्त है।

**वेदांत का मुख्य सिद्धांतः अद्वैत (Non & Duality)**

वेदांत का मूल सिद्धांत है अद्वैत–अर्थात 'नॉन–ड्युअलिटी'। इसका मतलब यह है कि संसार में जो भी भिन्नताएँ, अंतर और द्वैत हमें दिखाई देते हैं–जैसे आत्मा और ब्रह्म (परमात्मा), हम और वे, व्यक्ति और ब्रह्मांड–ये केवल भ्रम हैं। असल में, हम और ब्रह्म दोनों एक ही हैं।

**स्वामी विवेकानंद** ने इसे बहुत सुंदर तरीके से कहा थाः–

'आप और मैं, हम दोनों एक ही आत्मा (ब्रह्म/परमात्मा) का हिस्सा हैं, वही आत्मा जो इस पूरी सृष्टि में व्याप्त है।'

इसका मतलब है कि वास्तविकता एक है–अद्वैत। हम उस अद्वितीय ब्रह्म से अलग नहीं हैं, हम वही ब्रह्म हैं।

यह विचार कोई नया नहीं है। यह विचार उपनिषदों में भी मिलता है, जो वेदों के बाद की ग्रंथों का संग्रह है। वहाँ पर स्पष्ट रूप से कहा गया है:

''तत् त्वम् असि'' (तुम वही हो), यानी 'तुम वही ब्रह्म हो'। यह भी उस सच्चाई को उद्घाटित करता है कि आत्मा और ब्रह्म (परमात्मा) दोनों एक हैं, और इन दोनों के बीच कोई भेद नहीं है।

**अद्वैत का सरल अर्थ – एकता की भावना**

चलिए इसे एक उदाहरण से समझते हैं। मान लीजिए, एक महासमुद्र है। उसमें कई तरह की लहरें उठती हैं–कुछ बड़ी, कुछ छोटी, कुछ तेज, कुछ धीमी। इन लहरों के भीतर कोई अंतर नहीं है, क्योंकि सभी लहरें उसी महासमुद्र का हिस्सा हैं। उसी तरह, हम भी अलग–अलग रूपों में प्रकट होते हैं, लेकिन हमारी असली पहचान एक ही है–हम ब्रह्म का हिस्सा हैं।

जब हम इस सत्य को समझने लगते हैं, तो हमारा जीवन सरल और शांत हो जाता है। कोई भी परेशानी, संघर्ष, या चिंता हमारे अस्तित्व को हिला नहीं पाती, क्योंकि हम जानते हैं कि हम ब्रह्म के अंश हैं–हम अज्ञानी नहीं, बल्कि असीमित संभावनाओं से भरे हुए हैं। हम अपने शरीर और मन को वास्तविकता समझते हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि हम शाश्वत, असीमित चेतना हैं।

### वेदांत का उद्देश्य – आत्मा का जागरण

वेदांत का मुख्य उद्देश्य हमें आत्मा की वास्तविकता से परिचित कराना है। ब्रह्म और आत्मा का एकत्व तभी संभव है जब हम आत्म–ज्ञान (Self & Knowledge) की ओर बढ़ते हैं। इस ज्ञान के माध्यम से हम आत्मा के शाश्वत स्वरूप को पहचानते हैं और माया (illusion) के भ्रम से बाहर निकलते हैं। वेदांत हमें यह सिखाता है कि हमारी आत्मा कभी मरती नहीं। हम जो देख रहे हैं, वह केवल शरीर और मन का खेल है। हमारी असली पहचान हमारे भीतर की उस शाश्वत चेतना में है, जो न कभी पैदा होती है, न मरती है।

भगवद गीता (2.23) में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं:

**''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।''**

अर्थात, **''आत्मा न शस्त्रों से कटती है, न आग से जलती है, न जल से भीगती है, और न वायु से सूखती है।''**

यह सिखाता है कि आत्मा शाश्वत है, और यह कभी नष्ट नहीं होती।

### वेदांत और जीवन – रोजमर्रा की समझ

अब यह सवाल उठता है–क्या वेदांत हमें रोजमर्रा की जिंदगी में मदद कर सकता है? क्या यह सिर्फ दार्शनिक विचारों तक ही सीमित है, या इससे हम अपने जीवन में कुछ बदलाव ला सकते हैं?

**स्वामी विवेकानंद ने कहा था:**

**''जब तक तुम आत्मा के महान सत्य को नहीं समझते, तुम्हारा जीवन दिशाहीन रहेगा। लेकिन जब तुम इसे समझते हो, तो तुम्हारा हर कदम ब्रह्मा के मार्ग पर चलने लगता है।''**

वेदांत केवल विचारों का दार्शनिक खेल नहीं है; यह हमारे जीवन को बदलने की शक्ति रखता है। जब हम समझते हैं कि हम ब्रह्म से अलग नहीं हैं, तो हमारे हर कार्य, हर विचार में एक ऊर्जा उत्पन्न होती है। हम अपने कर्मों में निष्कलंकता (purity) और आध्यात्मिक दृष्टिकोण को अपनाने लगते हैं। हम न केवल अपने कार्यों, बल्कि अपने विचारों, भावनाओं और संबंधों में भी साक्षी भाव (witnessing consciousness) को अपनाने लगते हैं।

**भगवद गीता (2.47) के अनुसार:**

**''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''**

– ''तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, उसके फलों में नहीं।''

जब हम समझते हैं कि हमारे कर्म का फल नहीं है, तो हमारा मन चिंता, डर और मानसिक तनाव से मुक्त होता है। यही वेदांत का व्यावहारिक दृष्टिकोण है। यह हमें सिखाता है कि कर्म (action), स्मृति (memory), और भावनाएँ (emotions) केवल ब्रह्म की चेतना का ही हिस्सा हैं। हम हर कार्य में आत्मा का साक्षी बनकर कर्म करते हैं, जिससे जीवन सरल और शांति से भर जाता है।

### आध्यात्मिक प्रगति के मार्ग – तीन सरल कदम

वेदांत में आत्मा के सत्य को जानने के लिए तीन मुख्य उपाय हैं, जो हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में लागू कर सकते हैं:

1. **विवेक (Viveka)** – सही और गलत के बीच अंतर को पहचानना। यह समझना कि क्या स्थिर है और क्या अस्थिर। शरीर, मन और दुनिया सभी अस्थिर हैं, जबकि आत्मा स्थिर और शाश्वत है।

2. **वैराग्य (Vairagya)** – सांसारिक चीजों और इच्छाओं के प्रति मन का मोह छोड़ना। यह हमें बताता है कि जब हम बाहरी वस्तुओं और लोगों के प्रति मोह छोड़ते हैं, तो हम अपने भीतर की शांति को महसूस करने लगते हैं।

3. **आत्म–निरीक्षण (Self & Inquiry)** – अपने भीतर झांककर आत्मा का अनुभव करना। खुद से पूछना– 'मैं कौन हूँ?' और इस प्रश्न का उत्तर हमारे भीतर गहरे ध्यान और आत्म–चिंतन से मिलता है।

## निष्कर्ष – जीवन का असली उद्देश्य

वेदांत हमें आत्मा की शाश्वत प्रकृति को जानने की प्रेरणा देता है और उस ज्ञान से हम अपने जीवन में शांति, आनंद और सच्ची स्वतंत्रता पा सकते हैं। यही वह वास्तविकता है, जो हमें जीवन में पूर्णता और मुक्ति की ओर अग्रसर करती है।

**स्वामी विवेकानंद ने कहा था:**

**''उठो, जागो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।''**

**वेदांत यही सिखाता है–हमारी यात्रा आत्म–ज्ञान की ओर है**
**और वह ज्ञान हमारे भीतर पहले से विद्यमान है।**



# लोग आत्महत्या क्यों करते हैं ?



सिकंदर कुमार
लेखा परीक्षक

**"मेरी आँखों के जादू से तुम अभी वाकिफ नहीं हो,**
**हम उसे भी जीना सिखा देते हैं जिसे मरने का शौक हो !!"**

लोग आत्महत्या क्यों करते हैं? बड़े–बड़े डॉक्टर, अभिनेता, खिलाड़ी, गायक, विद्यार्थी, हास्य कलाकार, करोड़पति, अरबपति लोग आदि आत्महत्या क्यों करते हैं। इसका कारण क्या है? सबसे पहले आत्महत्या को समझते हैं कि आत्महत्या का अर्थ क्या है?

आत्म + हत्या = आत्महत्या "लैटिन" भाषा में कहा जाता है कि स्वयं को मारना। आत्महत्या अर्थात स्वयं को खत्म करना। हालांकि आत्मा की कभी हत्या नहीं होती, क्योंकि आत्मा तो अमर है। इसलिये भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि आत्मा न डूब सकती है, न अग्नि उसे भस्म कर सकती है, न उसे कोई अस्त्र न कोई शस्त्र मार सकता है। आत्महत्या या आत्मघात भी नहीं हो सकता। हां, स्वयं को दुःख दे सकता है, पीड़ा दे सकता है। यहां बात आई कि इन्सान आत्महत्या क्यों करता है। अगर आप पूरी दुनिया के आंकड़े देखे तो हर साल 8 से 10 लाख लोग आत्महत्या करते हैं। जैसा कि खबरों में हम सुनते हैं कि किसी किसान ने ऋण के कारण आत्महत्या कर ली। किसी विद्यालय के विद्यार्थी ने परीक्षा में कम अंक या फेल होने के कारण आत्महत्या कर ली। किसी मजदूर ने गरीबी के कारण आत्महत्या कर ली या किसी लड़की ने शोषण (मानसिक/शारीरिक) की वजह से अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। अब सवाल आत्महत्या करने का नहीं है, सवाल यह है कि इस तरह क्यों हो रहा है। पूरे विश्व में हर साल 8 से 10 लाख के करीब लोग आत्महत्या तो करते हैं पर दूसरे आंकड़े यह भी खुलासा करते हैं कि 10 मिलियन (1 करोड़) लोग आत्महत्या करने का प्रयास करते हैं पर वे सफल नहीं हो पाते।

यह जिन्दगी बहुत कीमती, आनंदमय, खूबसूरत, सुन्दर है पर हमें जिन्दगी जीने की कला नहीं आती इसलिये इन्सान जीवन को समझे और जिन्दगी जीने की कला सीख ले। यहां पर एक बात का स्मरण रहे कि जिन्दगी जीने की कला भी सीखनी पड़ती है, क्योंकि यह जीवन है जो हमें भगवान ने दिया है। मनुष्य का जीवन बहुत कीमती है। अगर हम जीवन मे छुपे हुये आनंद व खुशी को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें जिन्दगी जीने की कला सीखनी होगी कि जीवन कैसे जीना है। इसलिये कहा जाता है कि

**"जिन्दगी बहुत खूबसूरत है, मगर जीना नहीं आता,**
**नशा तो हर एक शह में है, मगर हमें पीना नहीं आता"**

एक कमरे में खजाना है, पर खजाने के कमरे में ताला लगा हुआ है। जब तक इन्सान को ताला खोलने की कला नहीं आएगी तब तक इन्सान उस खजाने तक नहीं पहुँच सकता। जो उस कमरे में कैद है, पर जिसने युक्ति के साथ उस ताले को खोलना सीख लिया, तो फिर उस ताले के पीछे जो अनन्त व कीमती खजाना छुपा है फिर वह बड़े, सरल सहज तरीके से उस खजाने को प्राप्त कर सकता है। इसलिये अगर आप सोचें कि यह जीवन, अगर समाप्त करने के लिये होता तो फिर 'रविंद्र नाथ टैगोर' जैसे महान कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और भारतीय साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता जैसे भगवान के आगे प्रार्थना क्यों करते हैं कि हे ईश्वर यह जिन्दगी बहुत खूबसूरत है। मैं तो आपके आगे विनम्र विनती करता हूँ कि मुझे बार–बार ये जिन्दगी दे, ये जीवन दे भगवान! ताकि इस खूबसूरत जीवन का आनंद ले सकूं। 'रविंद्र नाथ टैगोर' भगवान से क्या मांग रहे हैं कि यह जीवन बार– बार दे। इसका अर्थ है कि हम उस जीवन को माँग रहे हैं जिसे जीने की कला आ

गयी।

आप 'महात्मा बुद्ध' की जीवनी पढ़ कर देखें। महात्मा बुद्ध की वाणी का वर्णन करें तो वह भी कहते हैं कि जीवन में बहुत कुछ है। शांति, आनंद, प्रेम, खुशी, मोक्ष तक पहुँचने के लिये महात्मा बुद्ध कहते हैं कि व्यक्ति को इसे पाने के लिये संघर्ष व मेहनत करनी होगी। इसलिये महात्मा बुद्ध कहते हैं कि जिन्दगी जीने की भी एक कला होती है। एक बार एक व्यक्ति ने 'महात्मा बुद्ध' की सुबह से शाम तक निंदा व बुराई की। सुबह से शाम हो गयी। महात्मा बुद्ध जी ने मुस्कराते हुये अपने शिष्यों से कहा कि इस बेचारे को कुछ खाना खिला दो, पानी पिला दो, बेचारा थक गया होगा। वह व्यक्ति हैरान हुआ और महात्मा बुद्ध को कहने लगा कि तुम किस पत्थर के बने हो? मैंने सुबह से शाम तक आपकी बुराई व निंदा की, पर आप पर असर ही नहीं हुआ। महात्मा बुद्ध जी ने मुस्कुराते हुये उस व्यक्ति से कहा कि देखो अगर भूखे आदमी की थाली में मिट्टी व पत्थर खाने के लिये परोस दो तो वह नहीं खायेगा। भूखा तो है, पर वह नहीं खायेगा। इसलिये तुमने दिनभर मुझे जो दिया वो मेरे किसी काम का था ही नहीं, मैंने वो लिया ही नहीं, तो वो देने वाले के पास रहेगा। यहां कहने का अर्थ है कि व्यक्ति दिन भर महात्मा बुद्ध की बुराई करता रहा और महात्मा बुद्ध शान्त रहे। महात्मा बुद्ध के मन पर उस व्यक्ति की बात का असर नहीं हुआ, यह "जीवन जीने की कला" है।

दुःखों से भागो मत, दुःखों को जियो दुःखों से होश पूर्वक गुजरों और तुम पाओगे कि हर दुःख तुम्हें मजबूत बना गया, हर दुःख तुम्हारी जड़ों को बड़ा कर गया, हर दुख तुम्हें नया जन्म दे गया, हर दुःख तुम्हे फौलाद बना गया। ध्यान रखना मौत हमेशा कल होती है और जीना आज होगा। आज भगवान को न जान सकोगे तो कल कैसे जानोगे? कल आज से ही तो निकलेगा, कल आज से ही तो जन्म लेगा, कल आयेगा कहां से ? मैं कल की बात नहीं करता, मैं तो कहता हूं आज जीओ। भगवान को जीना है, पीना है, उठना है, बैठना है, चलना है, घूमना है। परमात्मा तुम्हारे जीवन की शैली व व्यवस्था होना चाहिये। परमात्मा सिर्फ यादाश्त नहीं, किसी मंदिर में बैठकर बजाई गई घण्टियों की आवाज नहीं, किसी मजार पर जलाया गया दीया नहीं, ईश्वर तुम्हारे उठने–बैठने, सोने–जागने, खाने–पीने, पूरी जीवन शैली का नाम है। परमात्मा एक जीने का ढंग है, जीने की एक कविता है, जीवन जीने का एक संगीत है। जियो परमात्मा को और तुम पाओगे कि मौत कभी आती ही नहीं।

आज हम सबके बच्चे विद्यालय व कॉलेज जाते हैं। बच्चों को बाहरी जीवन जीने की कला तो सिखाई जाती है कि कैसे समाज में रहना है, उठना है, बैठना है, बोलना है आदि हर तरह का अनुशासन सिखाया जाता है। यहां इस बात का ध्यान रहे कि विद्यालय व कॉलेज जा कर बच्चे बाहरी जीवन की कला तो सीख लेते हैं, पर कोई ऐसी शिक्षा भी होनी चाहिये जिसके द्वारा उनको अपने जीवन के भीतर से शांति, खुशियाँ, आनंद के बारे में समझाया जा सके। आप यहाँ इस बात को समझना कि इंसान के भीतर "जिन्दगी जीने की कला" भी सिखाये ।

हम आपको एक कहानी के बारे में बताते हैं कि एक डॉक्टर जिसने बहुत ही ज्ञान प्राप्त किया है। उसने डिग्रियां प्राप्त की और हर तरह की डिग्री उसके पास है। वह दुनिया का बहुत ही प्रसिद्ध डॉक्टर है। वह जिस इन्सान का इलाज करता है, वह स्वस्थ हो जाता है। वह एक हार्ट सर्जन है। उसने बड़े –बड़े नेताओं, अभिनेताओं, खिलाड़ियों का इलाज किया है। कहने का भाव है कि वह पूरी दुनिया में बहुत ही प्रसिद्ध व लोकप्रिय डॉक्टर है। जब हमें हृदय से संम्बंधित बीमारी हो तो हम सबसे प्रसिद्ध हार्ट सर्जन्स को ढूंढते हैं। उसका नाम, डिग्रियां देखते हैं। उसकी तस्वीरे देखते हैं, जो उसने मंत्री या प्रधान मंत्री का इलाज किया है। आप भी उस प्रसिद्ध डाक्टर से अपना इलाज करवाएंगे। आप उस चिकित्सालय में भर्ती हो जाते हैं कि कल आपका ऑपरेशन उस डॉक्टर के द्वारा होगा। आप रात को खुशी– खुशी से सो जाते हैं। सुबह का समय होता है। आप खुशी से उठते हैं। अचानक एक नर्स आपके पास आती है और घबरा रही है। आपको ऑपरेशन थिएटर में ले जाने के लिये आई है। परन्तु आप ऑपरेशन थिएटर में जाने से पहले उस घबराई हुई नर्स से

पूछते हैं कि आप दुखी क्यों हैं? तो नर्स जवाब देती है कि बहुत अफसोस की बात है कि रात को उस डॉक्टर की पत्नी और नौजवान बेटे की हादसे में मृत्यु हो गयी है। वह डॉक्टर मानसिक रूप से दुखी व परेशान है। क्योंकि दुनिया में ऐसा कौन सा व्यक्ति होगा जिसे अपने बच्चे या पत्नी की मृत्यु सुनकर सदमा न लगे व अपना मानसिक संतुलन न खो दे। पर फिर भी डॉक्टर आपका ईलाज करने के लिये आ गया है, पर उसका मानसिक संतुलन ठीक नहीं है। वह बहुत दुखी है। अब आप लोग सोचें कि आपकी मन की शांति का क्या होगा? क्या आप अपना इलाज करवाने के लिये तैयार होंगे? आपका जवाब होगा, नहीं। जब तक वह डॉक्टर मानसिक रूप से सही नहीं होता तब तक आप अपना ईलाज उस डॉक्टर से नहीं करवाएंगे। अब इस कहानी में आपको क्या पता चलता है कि दुनिया में आपका कितना भी नाम हो, प्रसिद्धि हो, डिग्रियां हो जैसे ही आपका मन भटकता या संतुलन बिगड़ता है उसी समय उसी वक्त आपका नाम, प्रसिद्धि, डिग्रियां सब बेकार हो जाती हैं। क्योंकि दुनिया में प्रसिद्ध होना जरूरी नहीं, नाम का होना जरूरी नहीं, जितना हमारे मन का संतुलित व शांत होना जरूरी है। जिसका मन शांत और संतुलित है। हम उसी को दुनिया का सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति कहेंगे। परन्तु जिसके पास करोड़ों–अरबों की दौलत है, महंगी गाड़ियां, उच्च पद, बेअन्त जायदाद हो, पर यदि उसका मन का संतुलन बिगड़ गया तो यह सब व्यर्थ है। जरा सोचिए कि उसकी दुनिया में क्या कीमत रह जायेगी?

मैं एक और प्यारी कहानी का उल्लेख करता हूँ जिससे सिद्ध हो जायेगा कि "जीवन जीने की कला" कैसे प्राप्त करें? हम अपना जीवन बाहरी बनावटी पदार्थों को इकट्ठा करने में गुजार देते हैं। आज के युग में व्यक्ति अपने भीतर की शांति, मोक्ष व आनंद की चिंता नहीं करता। एक बार एक 26 वर्षीय नवयुवक ऊंची पहाड़ी पर खड़ा था और अपनी जीवन लीला समाप्त करने वाला ही था कि अचानक एक फकीर ने उसको रोका और उसका कंधा पकड़ा, पूछा कि हे जवान! ये तू क्या करने जा रहा था? तब नवयुवक रोने लगा। फकीर ने फिर जवान से कहा, ये तू क्या करने जा था? तब नवयुवक रोते हुए बोला, हे फकीर मुझे मत रोको! मैं मरना चाहता हूँ। फकीर ने पूछा तुम अपनी जीवन लीला क्यों समाप्त करना चाहते हो? कारण बताओ कि आप क्यों मरना चाहते हो? शायद जिस वजह से आप मरना चाहते हो, मैं आपकी समस्या का समाधान कर दूं। अगर जीवन में कोई समस्या है, तो उस समस्या का हल भी है। कभी भी जिन्दगी में मुश्किल, हार, दुख, असफलता आये तो हिम्मत न हारो, हौंसला न छोड़ो, क्योंकि मुश्किलें कितनी ही बड़ी क्यों न हो यदि व्यक्ति हौंसला रखे तो बड़ी से बड़ी मुश्किलों से इन्सान उभर जाता है। बस अपने भगवान पर भरोसा होना चाहिये कि मेरे साथ दुनिया में कोई हो या न हो, मुझे कोई फर्क नहीं, परवाह नहीं, क्योंकि मेरे साथ मेरा भगवान है।मेरा भगवान है मेरे साथ, तो मुश्किलों का हल भी निकलेगा।

**जमीन बंजर हुई तो क्या हुआ, तो वहीं से जल भी निकलेगा,**
**न हो मायूस न तू घबरा, भरोसा रख भगवान पर,**
**इन ही रातों के दामन से, सुनहरा कल निकलेगा।**

जब इन्सान को अपने पर विश्वास है कि मेरा भगवान मेरे साथ है तो वह बड़ी से बड़ी मुश्किल का हल भी निकाल लेगा, हर समस्या दूर होगी! इसलिये आपकी जिन्दगी में कोई समस्या है तो आप को समस्या ऐसी नजर आती है कि इस समस्या का कोई समाधान नहीं है। जीवन जीने का नहीं, मरने का मन करता है। तो आप मुश्किलों के डर से ना भागो बल्कि उस परमेश्वर पर विश्वास रखो। उस परमात्मा का ध्यान करें। भगवान का ध्यान आपको बड़ी से बड़ी समस्याओं से निकाल देगा। इन्सान के भीतर आत्म विश्वास होना चाहिए। यह बात उस फकीर ने उस युवक को कही थी। पर उस युवक पर उस फकीर की बात का कोई असर नहीं हुआ। 26 वर्षीय युवक फकीर से कहने लगा मुझे मरने दो। मैं गरीब हूँ, मेरे मित्र मुझे बुलाते नहीं, मेरे भाई मुझ से बात

नहीं करते। दुनिया मुझसे नफरत करती है, मुझे मरने दो। फकीर ने उस युवक को फिर से आत्महत्या करने के लिये रोका। फकीर ने कहा मेरे पास तेरी समस्या का हल है। जो तेरी सभी समस्याओं को दूर कर सकता है। फिर भी, आपको लगे कि आपकी समस्याएं हल नहीं हो सकती तो आप आत्महत्या कर सकते हैं। पर मुझे थोड़ा–सा वक्त दें। कुछ समय बाद फकीर बोला आपकी सभी समस्याओं का हल हो गया। युवक ने कहा, कैसे? फकीर ने कहा कि चल मेरे साथ। युवक ने फकीर से पूछा कि कहां जाना है? फकीर ने कहा कि इस नगर में एक बादशाह है। वह मेरा बहुत प्रिय मित्र है। मैं आपको उस बादशाह के पास लेकर जाऊंगा। क्योंकि उस बादशाह को एक आँख की जरूरत है और उसे एक आंख के साथ–साथ कुछ अंगों की भी जरूरत है। अब तुझे मरना तो है ही। अगर तू मर गया, तो तेरा पूरा शरीर खराब हो जायेगा। तेरे पास आँखें भी है तेरे पास वो अंग भी है जो बादशाह को चाहिये और देख, वो मेरा खास मित्र भी है। मैं तुझे एक आंख के बदले एक लाख रुपये बादशाह से दिलवा दूंगा। बस तू मेरे साथ चल। अगर तू दोनों आंखें देने को तैयार है तो मैं तुझे दो लाख रुपये दिलवा दूंगा और तुझे पैसों की जरूरत भी है। तो मरने से अच्छा है कि तू आंख दे और पैसे ले और घर में आराम से बैठ। बादशाह को गुर्दों की भी जरूरत है। अगर तू एक गुर्दा देता है तो मैं तीन लाख रुपये दिलवा दूंगा। चल मेरे साथ। अब इस बात का 26 वर्षीय युवक पर गहरा असर हुआ। उस समय उस युवक का ध्यान अपने शरीर पर गया। युवक उस फकीर के साथ बादशाह के पास चल पड़ा। परन्तु चलते–चलते नवयुवक अपने हाथ से एक आँख बन्द करके देखता है कि दुनिया कैसी दिखती है? अगर मैं दोनों आंखे बन्द कर लूं तो अंधेरा छा जायेगा। अगर मेरी दोनो आंखें चली गयी तो मैं उन पैसों का क्या करुंगा? वो पैसा मेरे किस काम का? चलते–चलते युवक रुक गया। युवक ने फकीर से कहा हे फकीर! पहली बार सोचने का अवसर मिला है कि मेरा शरीर बहुत ही कीमती है। अब मैंने निर्णय कर लिया है कि मैं आत्महत्या नहीं करुगा। फकीर ने कहा मैं तुझे बादशाह से एक आँख के बदले एक लाख रूपये दिलवाऊंगा। युवक कहने लगा कि एक लाख तो क्या मैं दस लाख भी नहीं लूंगा। फकीर ने कहा ''दस लाख नहीं तो 50 लाख रूपये दिलवाऊगा।'' युवक कहने लगा कि 50 लाख तो क्या एक करोड़ भी नहीं लूंगा, उन पैसों का मैं क्या करूँगा जब मुझे दिखाई ही न देगा। इसलिये मैं बादशाह के पास नहीं जाऊंगा। फकीर ने मुस्कुराते हुये युवक से पूछा, अब कहाँ जाना है? मरने जाना है? युवक ने कहा ''नहीं, हे फकीर! मुझे अब समझ में आ गया है कि मेरे भीतर बहुत ही कीमती खजाना है। उस फकीर की बातों का उस युवक के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा। युवक कहने लगा कि मैं बाहरी बनावटी दुनिया के चक्कर में अपनी जीवन लीला समाप्त करने जा रहा था। मुझे इस बात का पता ही नहीं था कि भगवान ने मेरे शरीर को बहुत कीमती बनाया है। हे फकीर! आपकी बातों की वजह से मेरा ध्यान पहली बार मेरे शरीर पर गया। बाहरी दुनिया तो आती जाती रहती है मुझे कोई परवाह नहीं। जिन्दगी है तो सब कुछ है। क्योंकि जिन्दगी है तो लाखों से करोड़ो रुपये कमाये जा सकते हैं। अगर लाखों–करोड़ों रुपये हों तो भी आप जिन्दगी नहीं खरीद सकते, इसलिये जीवन में ऐसी कोई बड़ी बात नहीं होती कि आप अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर देते हैं। जीवन लीला वह लोग समाप्त करते हैं जिनको "जीवन जीने का कला" नहीं आती हो।

भगवान शिव कहते हैं कि दुनिया में सबसे ज्यादा आत्मविश्वास उस व्यक्ति में होता है, जिसे एक समय पर सब ने छोड़ दिया हो और उसने अकेले जीना सीख लिया हो क्योंकि उसके बाद उसकी जिन्दगी में कोई रहे या न रहे, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। यही है "जीवन जीने की कला" इसे कहते हैं "जीवन जीने की कला।"

दुनिया में बहुत प्रसिद्ध लोग हुए जिन्होंने भी भरी जवानी में आत्महत्या की जैसे माइकल जैक्सन, मर्लिन मनरों, गुरु दत्त, सुशांत राजपूत, दिव्या भारती, जिया खां, क्रिस बेनोइट आदि चमकते सितारे थे। क्रिम वेनोइट जो पूरी दुनिया के महान, प्रसिद्ध व लोकप्रिय पहलवान थे। उन्होंने अपनी पत्नी, छोटे बच्चे व स्वयं की जीवन

लीला समाप्त कर ली। इनके पास किसी भी चीज की कमी नहीं थी। यह एक कनाडाई पेशेवर पहलवान थे। दो बार वर्ल्ड हैवीवेट चैम्पियन और पांच बार संयुक्त राष्ट्र चैम्पियन थे। क्रिस बेनोइट ने अंडरटेकर, कर्ट एंगल, गोल्डबर्ग जैसे प्रसिद्ध पहलवानों को हराया था। जबकि इन्हें हराना नामुमकिन था। उन्होंने असफल विवाह, नशे का दुरुपयोग, मानसिक असंतुलन के कारण अपनी पत्नी और बच्चे को मार डाला और बाद में खुद को भी फांसी लगा ली।

गुरु दत्त भारतीय हिन्दी फिल्मों के प्रसिद्ध अभिनेता, निर्देशक एवं निर्माता थे। उनकी शराब ही उन्हें ले डूबी। यही उनकी मौत का कारण बनी। उन्होंने आत्महत्या का दो बार प्रयास किया पर वह सफल नहीं हो पाये। अधिक मदिरा व नींद की दवा लेने से उनकी मृत्यु हो गयी।

माईकल जैक्सन एक बहुत ही प्रसिद्ध नाम है। पूरी दुनिया उनको जानती है। पर नशे की लत ने इनकी जिन्दगी बर्बाद कर दी। वह दूसरों की बातों को अपने दिल पर लेते थे। जब कोई उनका अपमान कर देता था तो उन से सहन नहीं होता था। वह अधिक नशा करते थे। ताकि पुरानी बातों को भुला सके। एक बार किसी ने उन पर टिप्पणी की आप डांस बहुत अच्छा करते हैं पर कोई फायदा नहीं क्योंकि आपका रंग काला है। इस बात का माईकल जैक्सन के मस्तिष्क पर गहरा असर हुआ। माईकल जैक्सन में मानसिक संतुलन नहीं था। अपने शरीर को सुंदर बनाने के चक्कर में न जाने कितने ही ऑपरेशन करवाये। अगर इन्सान छोटी–छोटी बातों को अपने मन में बसाना शुरू कर देता है, इसका अर्थ है कि इन्सान के भीतर शांति व सहनशीलता की कमी है। बिना शांति और सहनशीलता के इन्सान अपनी जिन्दगी में उन्नति नहीं कर सकता क्योंकि धन का ढेर इकट्ठा कर लिया, पूरी दुनिया में नाम हो गया, प्रसिद्ध हो गये। यह सच्ची सफलता नहीं है।

मर्लिन मुनरो एक प्रसिद्ध अमेरिकी अभिनेत्री थी। मर्लिन मुनरो ने भरी जवानी में आत्महत्या की। कारण, सच्चा प्रेम। कितने प्रेमी उपलब्ध थे, ऐरे–गैरे से लेकर अमेरिका के राष्ट्रपति कैनेडी तक, सब उसके प्रेमी थे। वह बहुत सुन्दर थी। प्रेमियों की भीड़ से थोड़ा प्रेम मिल जाता था तब भी वह मन की शांति और सच्चे प्रेम से वंचित थी। प्रेम आत्मिकता का एक अनुभव है, प्रेम एक अन्तर्गता है, प्रेम तो बड़ी कोमल घटना है। मर्लिन मुनरो को चाहने वालों की कमी न थी। मर्लिन मुनरो ने आत्महत्या करने से पहले एक पत्र लिखा था कि मन की शांति और सच्चा प्रेम नहीं मिला इस दुनिया से, मैं जी कर भी क्या करुंगी?

अगर इन्सान यही सोचता रहे कि बाहरी खुशियों से जीवन अच्छा हो जायेगा तो अभी हमने जिनका जिक्र किया उनके पास किसी भी चीज की कमी नहीं थी। जिससे हमें सफलता व कामयाबी मिल जायेगी। इनके पास धन, दौलत, शोहरत, लग्जरी गाड़ियां, घर, नाम आदि सब कुछ था पर फिर भी इन्होंने आत्महत्या कर ली या नशे की लत के कारण आत्महत्या की। सब कुछ था, दुनिया में ये बहुत ही लोकप्रिय व प्रसिद्ध थे। दुनिया इनसे मिलने के लिये तरसती थी, पर इनके पास क्या नहीं था? मन की शांति, भीतर का आनंद, संतोष, सच्चा प्रेम व सहनशीलता। दुनिया में प्रसिद्ध व कामयाब व्यक्ति वही है जो मन जीते वो जग जीते। हे मनुष्य! तेरी सोच ऐसी हो जाये कि दुनिया तुझे कुछ भी कहे पर तुझ पर किसी भी बात का असर न हो। जिसने अपने मन को शांत रख लिया, किसी के कहने पर अपना मानसिक संतुलन नहीं खोया, यहीं है तेरे जीवन की असली कामयाबी।

आज वर्तमान में स्कूल कॉलेजो में बच्चों को बताया जाता है कि डॉक्टर बनना है, तो यह डिग्री,

इंजीनियर बनना है, तो यह डिग्री, वकील बनना है, तो यह डिग्री, उच्च अधिकारी बनना है, तो यह डिग्री। अच्छा होता कि बच्चों को भीतर की खुःशी, मन की शांति, मानसिक संतुलन का भी अध्ययन कराया जाता ताकि बच्चा बचपन से ही अपने मन को वश में करना सीख लेता फिर आत्महत्या, मरने या मारने तक की नौबत ही नहीं आती। बच्चे आत्महत्या क्यों करते हैं ? पढाई में कमजोर हो, या साल भर मेहनत न की हो, या सलेब्स से बाहर हो, या 100 में से 90 या 100 अंक प्राप्त करने के चक्कर में आत्महत्या कर लेते हैं। इसका अर्थ है कि बच्चों के भीतर मन की शांति नहीं है। मानसिक संतुलन ठीक नहीं है। पारिवारिक झगड़े भी होते हैं जैसे कि पति–पत्नी, सास–बहु, भाई–भाई, भाई–बहन, बहन–बहन, बाप–बेटे, मां–बेटे, मां–बेटी, पड़ोसी व मित्रों के झगड़े आदि से हमें यह संकेत मिलता है कि भीतर की शांति नहीं है और जरा सी बात पर आत्महत्या कर लेते हैं।

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों! दुनिया में ऐसा कोई नहीं जिसकी कोई समस्या न हो और दुनिया में ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका कोई समाधान न हो। जिन्दगी में ऐसा कोई इन्सान आपको न मिला होगा, जिसके जीवन में कोई समस्या न हो। अरे बड़े से बड़े महापुरुष, विद्वान हुए हैं। इनके जीवन में भी कोई न कोई समस्या तो जरूर आई थी। पीर बुद्धू शाह बादशाह ने हिंदुस्तान के लिए दो पुत्र व 700 मुरीद कुर्बान किये। इतिहास के पन्नों में अमर रहेगी पीर बुद्धू शाह जी की शहादत। गुरु गोविन्द सिंह जी के माता–पिता और चार पुत्र हिंदुस्तान के लिए शहीद हो गये। अरे कल्पना करो! महावीर जैन के कानों में कील ठोक दी गई, जीसस को क्रॉस पर लटकाया गया, महात्मा बुद्ध की तो गलत महिलाओं ने बदनामी कर दी थी, भगवान श्री राम को जिस समय राज्य मिलने वाला था उसी समय वनवास में जाना पड़ा, भगवान श्री कृष्ण जब जन्मे तो वहां पर कोई थाली/ढोल बजने वाला तक न था। समस्या आना जीवन का हिस्सा है लेकिन समस्याओं को मुस्कुराते हुए पार करना, इसी का नाम 'जीवन जीने की कला' है। जीवन भगवान के हाथों में है पर जीवन जीने की कला हमारे पास है।

हम कह सकते हैं कि जिसने जिन्दगी "जीने की कला" सीख ली है। वह हर समस्या को मुस्कुराते हुए हल कर सकता है। चाहे बाहर के हालात कैसे भी हो। आपको हमेशा शान्त व खुश रहना है। चाहे कोई भी आपकी बुराई व निन्दा करे, इन बातों का आप पर कोई असर न हो। इसी को जीवन 'जीने की कला' कहते हैं। जिन्दगी एक परीक्षा है। इस जिन्दगी की परीक्षा में सफल होना जीवन "जीने की कला" पर निर्भर करता है। अगर कोई आपकी निन्दा, बुराई, ईर्ष्या करें, तो आप पर कोई असर न हो तो समझ लेना आप जिन्दगी की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये भगवान श्री कृष्ण गीता में उपदेश कहते हैं कि जो व्यक्ति किसी की निन्दा, चुगली, बुराई, ईर्ष्या, द्वेष, गाली–गलौज करता है वह व्यक्ति स्वयं भी अच्छा नहीं हो सकता। उसका जीवन व्यर्थ है।

महात्मा बुद्ध और महावीर जैन समाज को छोड़कर जंगल में चले गये थे। उसके पीछे और कोई कारण नहीं था। अशांत लोगों की भीड़ में, बीमार मन की भीड़ में, विक्षिप्त लोगों की भीड़ में सार क्या है? जंगल में वृक्षों से दोस्ती बना ली, पशु पक्षियों से नाता जोड़ा, आदमी से नाता तोड़ा। जरा सोचो कि आदमी का कितना बड़ा अपमान हुआ है। आप ध्यान करो कि पशु–पक्षी, पौधे–पहाड़ तुम से जीत गये। महावीर को उन्होंने बेचैनी ना दी, न बुद्ध को परेशान किया। तुम्हारे बीच खड़ा होना मुश्किल हो गया था। इसलिये महावीर जैन और महात्मा बुद्ध ने अपनी वाणी में "मन की शांति" का उल्लेख करते हैं ।

हम एक और कहानी का उल्लेख करते हैं। एक सेठ है जो दुनिया का सबसे अमीर व्यक्ति है। उसके पास लाखों–करोड़ों रुपये, महंगा घर, सोने, चांदी सब कुछ है। एक बार उस सेठ ने एक संत को अपने सुन्दर महल में बुलाया और वह संत को अपना आलिशान महल दिखा रहा था और उसको बता रहा था कि मेरे पास करोड़ों की शौहरत है, पैसा है, नौकर–चाकर है, बेअन्त जमीन जायदाद है। बातों–बातों में वो संत उसके घर को देख रहा था। उसकी नजर एक बहुत बड़े लोहे के पिंजरे पर पड़ी। उस लोहे के पिंजरे में एक नौजवान युवक कैद था। जो पिंजरे को अपने हाथों से जोर–जोर से हिला रहा था। वह शोर मचा रहा था और उस पिंजरे से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था। उस वक्त उस संत ने सेठ से पूछा कि सेठ जी यह युवक कौन है ? जो इस महल के पिंजरे में कैद किया हुआ है। सेठजी के आंखो में आंसू आ गये, वह रोने लगे। सेठ जी रोते–रोते कहने लगे कि ये मेरा इकलौता बेटा है। यह मेरी पूरी जायदाद का इकलौता वारिस है। करोड़ों– अरबों की सम्पत्ति, आलिशान महल का वारिस है, पर मैं क्या करूँ? यह मानसिक तौर से पागल है। इसलिये मैंने इसे यहां कैद किया हुआ है। अगर इसे पिंजरे में कैद न करूं तो यह महल के बाहर भाग जाता है, यह शीशे, दरवाजे तोड़ कर बाहर भाग जाता है, इसकी जान बचाने के लिये मैंने इसको पिंजरे में कैद किया है। तब संत ने कहा इन अरबों–खरबों रुपयों का क्या करना जब मानसिक संतुलन नहीं है? जरा सोचो किसी मानसिक बीमार व्यक्ति के आगे करोड़ों–अरबों रुपये रख दो तो उसके लिये ये सब व्यर्थ, बेकार है। इसलिये महात्मा बुद्ध ने भी इस सच्चाई को अपनाया, खोजा, पहचाना। तभी तो महात्मा बुद्ध अपने शाही महलों, राज –पाट, दास–दासियों, बीमार मन के व्यक्तियों की भीड़ को छोड़ कर जंगलों में 'मन की शांति' को खोजने चल पड़े। वह जानते थे कि सबसे ज्यादा कीमती खजाना तो मनुष्य के भीतर की शांति है। आज के युग में इंसान अपने भीतर की शांति, मोक्ष, आनंद की चिंता नहीं करता। वह बाहरी बनावटी पदार्थों को इकट्ठा करने में अपनी सारी जिन्दगी गुजार देता है।

इस दुनिया में संत, महात्मा, गुरु फकीर, ऋषि–मुनि, महान पुरुष, योद्धा पैदा हुये हैं जिन्होंने दुनिया को 'जीवन जीने की कला' सिखाई है। पर आज मनुष्य पैसे और उच्च पद पाने, दूसरों को नीचा दिखाने में लगा हुआ है। जिससे वह अपना पारिवारिक व आत्म सुख खो देता है। उदाहरण के तौर पर जब आप अपने घर जाते हो तो आप देखते हैं कि आपके पड़ोसी ने कूड़ा आपके घर के बाहर रखा है। आप उस समय क्या करेंगे? यहां आपके पास दो ही रास्ते हैं। पहला कि आप डांटे या मारपीट करें, जिससे आपकी और आपके पड़ोसी के मन की शांति भंग होगी। दूसरा रास्ता यह है कि आप शांति से उस कूड़े को उठाकर कहीं और रख दे या कूड़े के डिब्बे में डाल दें। आप अपने मन में ही सोचें कि कूड़ा ही तो है तो क्या हुआ। इससे आप का मन शांत रहा और पड़ोसी के उकसाने पर भी आपने झगड़ा नहीं किया। इससे यह सिद्ध होता है कि आपके पड़ोसी द्वारा झगड़े के लिए उकसाने पर भी आपका मन शांत रहा। जिन्दगी "जीने की कला" केवल उन्हीं लोगों के पास है जो यह समझते हैं कि समस्या तो जिन्दगी का हिस्सा है और उसे मुस्कुराते हुये उन सभी समस्याओं से निपटना है । आपने छोटी–छोटी बात पर गुस्सा व क्रोध नहीं किया। यदि आपके किसी मित्र का जन्म दिवस है और आप अपने मित्र के जन्म दिन पर कार को उपहार के रूप में भेट करते हैं। आपके मित्र या उसके परिवार के किसी भी सदस्य को कार चलानी नहीं आती है, तो वह उपहार उसके लिये व्यर्थ है। अगर अनजान व्यक्ति कार चलायेगा तो इधर–उधर टक्कर मारेगा। कहने का भाव है कि वह स्वयं भी मरेगा और अपने साथ दूसरों

को भी ले मरेगा। वह कार का लाभ नहीं ले सकता वह अपना और दूसरों का भी नुकसान करेगा। परन्तु जिसे गाड़ी चलानी आती है। वह गाड़ी को बहुत सुंदर व आनन्दमय तरीके से चलाएगा। वह गाड़ी का पूरा लाभ लेगा। इसी तरह जिसे जिन्दगी रूपी गाड़ी चलाने की कला आ गयी। वह जिन्दगी रूपी गाड़ी को बहुत प्रेम, स्नेह, दया, आनन्द व खुशी से चलाएगा। वह स्वयं और दूसरों को भी लाभ पहुंचाएगा। जिसे जिन्दगी रूपी गाड़ी चलानी नहीं आती वह स्वयं और दूसरों को भी नुकसान पहुंचाएगा। अगर जीवन का आनन्द लेना है तो "जीवन जीने की कला" सीखें, इसलिए इस जीवन को समझने का प्रयास करें। कई बार आप देखते हैं कि कोई व्यक्ति आपको देखने में बहुत खुश नजर आता है। आप कहते हैं कि वह व्यक्ति दुनिया का सबसे खुशनसीब व्यक्ति है, पर उस खुशी का क्या लाभ? जब व्यक्ति अन्दर से ही दुखी है और अंदर से उसका मन खोखला है।

एक बार फिर मैं आपको एक सुंदर सी कहानी का उल्लेख करता हूँ, एक बार एक आदमी मनोचिकित्सक के पास गया। वह व्यक्ति डॉक्टर को कहता है कि डॉक्टर साहब मैं बहुत ही दुख, तकलीफ, चिन्ता व तनाव में रहता हूँ। हर वक्त मेरे दिमाग में बुरे ख्याल चलते रहते हैं कि मैं आत्महत्या कर लूं। मैं इस दर्द व पीड़ा को कैसे समाप्त करूं। मेरे जीवन में शान्ति कैसे आ सकती है? उस समय डॉक्टर ने कहा कि देखो मैं आपको दवाई देता हूँ और उसके साथ–साथ मैं आपको एक कार्य भी बताऊंगा! वो दिन में दो बार करना है। उस व्यक्ति ने डॉक्टर से पूछा कि वह कौन सा कार्य है डॉक्टर साहब? डॉक्टर ने कहा कि इस शहर में एक बहुत सुंदर सर्कस लगा है। उस सर्कस में एक बहुत मशहूर व प्रसिद्ध जोकर है जो लोगों को खूब हंसाता है। वह बहुत अच्छा अभिनय करता है और लोग उसे देख कर बहुत खुश होते हैं। मैं भी दिन में एक बार उस सर्कस में जाता हूँ और जोकर को देखकर मुझे बहुत आनंद व खुशी महसूस होती है। इसलिये मैं आपको दवाई के साथ–साथ यह सलाह भी दूंगा कि आपको सुबह–शाम उस सर्कस में जाना है और उस जोकर को जरूर देखना है। जो लोगों को खूब हंसाता है। जगह–जगह उस जोकर के पोस्टर व इश्तिहार लगे हैं। व्यक्ति डॉक्टर को कहने लगा, डॉक्टर साहब! मुझे माफ करना, आप जिस जोकर को देखने की बात कर रहे हैं। वह कोई और नहीं, मैं ही हूँ। डॉक्टर एकदम हैरान हुआ और कहने लगा कि आप इतने प्रसिद्ध, मशहूर व लोकप्रिय हास्यकलाकार हैं, जगह–जगह आपके पोस्टर लगे हैं, वो भी हंसते हुए। मैंने स्वयं आपको सर्कस में देखा कि आप लोगों को खूब हंसाते हो आप इतना अच्छा अभिनय करते हैं कि मैं स्वयं बहुत खुश होता हूँ। मैंने कई लोगों को सलाह दी है जो मैं आपको दे रहा हूँ, पर यह तो मुझे आज पता लगा कि जो व्यक्ति बाहर से इतना खुश दिखता है, अन्दर से पीड़ित है। बाहर से किसी की अमीरी, धन, जायदाद, प्रसिद्धि, लोकप्रियता देखकर आप यह अनुमान नहीं लगा सकते कि वह स्वयं भीतर से कितना दुखी है, पर व्यक्ति जब दूसरों को हंसा रहा है, खुशी दे रहा है, वह सब दिखावा व व्यर्थ है। जब खुशी अपने भीतर से होगी तो फिर यह होगी सच्ची खुशी और मुस्कुराता हुआ चेहरा। हमारा प्रभाव दूसरों पर हजार गुणा असर करेगा। इसलिए कहा जाता है कि जिन्दगी में कामयाब होना है तो पहले अपने भीतर खुशी, मोक्ष, आनंद, व संतोष प्राप्त करें। यह सब तभी प्राप्त होगा जब हम ध्यान करेंगे, जब हम मेडिटेशन करेंगे। अंततः ऋषि–मुनि, साधु, फकीर, गुरुजनों आदि ने दुनिया को प्रभु का नाम स्मरण करने के लिये क्यों कहा ताकि भगवान को याद किया जा सके। ध्यान लगाने के लिये समय भी निकालना चाहिये। जिस भगवान को हम याद करते हैं या ध्यान करते हैं, क्या वे हमारी रक्षा करने नहीं आयेगा? एक बार विचार तो करो आप।

जैसा कि पहले हमने जिक्र किया था कि बच्चों को बचपन में ही ध्यान करना सिखाया जाये, तो वे अपने मन को अपने वश में रख सकते हैं। ध्यान नहीं भटकता, तभी हमें जीवन में सफलता प्राप्त हो सकती है। सिर्फ बच्चों को डाक्टर, वकील, उच्च अधिकारी, इंजीनियर, बिजनेसमैन बना देना ही सब कुछ नहीं है। जब उनके अन्दर मन की शांति व खुशी नहीं है, तो सब कुछ व्यर्थ है। कभी अपने आप से प्रश्न करके देखो कि आपके पास सोना–चांदी, नौकर–चाकर, मित्र, महंगी गाड़ी, खूब सारा पैसा, शौहरत, घर–जायदाद है व आप उच्च पद के अधिकारी है, क्या करोगे, जब भीतर से मन शांत व खुश नहीं है? जब आपका मन संतुलित नहीं है, आप कहोगे कि मैं सब कुछ छोड़कर जंगल भाग जाऊं या आत्महत्या कर लूँ!

अगर देखा जाये तो जिन्दगी में बहुत कुछ है। जिन्दगी में ईश्वर ने बहुत कुछ दे रखा है। परन्तु उस बहुत कुछ को तभी पाया जा सकता है जब हमारी दृष्टि स्वयं के भीतर जायेगी और जब तक हम बाहरी दुनिया को देखते रहेगें, तब तक हम दुखी ही रहेंगे क्योंकि बाहरी दुनिया के बहकावे में हम बहुत कुछ प्राप्त तो कर लेते हैं। जितना मर्जी धन दौलत, उच्च पदवी, अच्छा घर ले लें, परन्तु फिर भी हमारा मन अंशात ही रहता है। मन यही कहता है कि कमी है कमी है। जिन्दगी में पैसा, उच्च पद यही सब कुछ नहीं है और दुनियावी रिश्तों पर बहुत निर्भर रहना ये भी समझदारी नहीं है जिन्दगी को ऐसे मत जीओ कि रिश्ता गया, मित्र गया, पैसा गया, उच्च पद गया और तुम आत्महत्या कर लो। जब हमने अपने भीतर के परम् धन को पहचान लिया, उस परम् शांति को पहचान लिया तब हमें सच्ची खुशी मिलेगी। अगर सच्चा आनंद व प्रेम प्राप्त करना है तो अपनी दृष्टि को बाहरी दुनिया से हटाकर अपने भीतर लगाएं।

कहा जाता है कि एक शाही महल के अंदर एक दासी का बच्चा खेल रहा था। खेलते–खेलते बच्चे को एक हीरा मिला। जो रानी के गले के हार से निकल गया था। बच्चे ने अपनी मां (महल की दासी) को हीरा दिया। उसकी मां ने देखा कि लगता तो हीरा है, परन्तु दासी को हीरे की परख न थी। मन ही मन दासी सोचने लगी कि अगर मैंने यह कह दिया कि यह हीरा है तो यह बच्चा महल में शोर मचा देगा, हीरा है हीरा है, उस दासी ने बहुत ही चालाकी से हीरे को दरवाजे के बाहर फेंक दिया और बच्चे को कहा कि यह हीरा नहीं पत्थर है। बच्चा वहाँ से चला गया और खेल में मग्न हो गया। अब दासी उस दरवाजे के पास आयी और फेंका हुआ हीरा उठा लिया। उसे उठाकर सुनार के पास ले गयी। सुनार बहुत ही चतुर था। दासी ने सुनार को हीरे की परख करने के लिया कहा कि यह हीरा है या पत्थर है। सुनार भी मन ही मन सोचने लगा कि रानी के महल से है तो हीरा ही होगा, पत्थर नहीं और अगर मैंने यह कह दिया कि यह हीरा है तो मुझे इसकी भारी कीमत देनी होगी। इस तरह सुनार ने उस हीरे को बाहर फेंक दिया और दासी से कहा यह हीरा नहीं पत्थर है। दासी वहां से निराश होकर वापस महल चली गयी। अब सुनार ने बाहर फेंके हुए हीरे को उठाया। सुनार को भी हीरे की परख करनी नहीं आती थी। सुनार केवल सोने की परख कर सकता है ना कि हीरे की। हीरे की परख जौहरी कर सकता है। अब सुनार हीरे की परख करने के लिये जौहरी के घर गया। जौहरी उस हीरे की परख करने लगता है। जौहरी भी मन ही मन सोचने लगा की इस सुनार को तो हीरे की परख करनी नहीं आती है और अगर मैंने यह कह दिया कि ये हीरा है, तो मुझे इसकी बहुत भारी कीमत चुकानी होगी। जौहरी ने भी बहुत ही चालाकी से हीरे को घर के बाहर फेंक दिया! जौहरी सुनार को कहने लगा कि यह तो पत्थर है। सुनार निराश होकर वहां से चला गया और जौहरी ने जो हीरा घर के बाहर फेंका था, वह उसे वापस लेकर आया। जौहरी ने

हीरे को देखा कि हीरा टूट गया है। जोहरी हैरान हो गया कि हीरा तो कभी भी टूट ही नहीं सकता, यह कैसे टूट गया? उस हीरे के दो हिस्से हो गये थे। वह सोच में पड़ गया और बोला, ऐ 'हीरे तू कैसे टूट गया?' तब हीरे में से आवाज आयी! "हे जौहरी! महलों की रानी की दासी ने मुझे महल के बाहर फेंक दिया, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा क्योंकि वह अनजान थी। उसे हीरे की परख नहीं थी इसलिए उसे मेरी कीमत का पता नहीं था इसलिए मैं नहीं टूटा। फिर वो सुनार के पास गई, सुनार ने भी मुझे बाहर फेंक दिया क्योंकि सुनार को भी हीरे की परख नहीं थी, उसे भी मेरी कीमत का पता नहीं था, मैं फिर भी नहीं टूटा। हे जौहरी! तू तो मेरी कीमत जानता था कि मैं लाखों–करोड़ो का हूँ, यह जानते हुये भी तूने मुझे घर से बाहर फेंक दिया। यह देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ कि तूने सब कुछ जानते हुये भी मुझे बाहर फेंक दिया। मुझे इतना दुःख हुआ कि मैं टूट गया....."

यहां इस बात का अध्ययन करें कि आपका जीवन भी हीरे की तरह कीमती व मूल्यवान है। आपका जीवन इस दुनिया में लाखों–करोड़ों का है, इसे ऐसे ही व्यर्थ न जाने दे। इस जीवन को ऐसा चमका लो कि इस चमक से पूरा संसार चमक जाये और पूरी दुनिया आपको मिलने के लिए तरस जाये। अब आपको निर्णय लेना है कि आपको अपने जीवन को कैसे बनाना है। आप अपने जीवन को ऐसा भी बना सकते हो कि अच्छे विचार, अच्छे गुणों के साथ, अच्छे कर्मों के साथ आप पूरी दुनिया से लाभ ले सकें। इसलिये यह मत सोचो कि पैसा नहीं है, उच्च पद नहीं है, घर नहीं है, तो जीवन व्यर्थ है। आपको यह समझना होगा कि आपकी जिन्दगी ही दुनिया की सबसे कीमती चीज है। अगर आपने जीवन को ही नहीं समझा तो आपने अपना जीवन गंवा दिया। फिर आप जितना मर्जी बाहरी बनावटी दुनिया एकत्रित कर लेना परन्तु आप जीवन में कभी भी सफल नहीं हो सकते।

महावीर जैन ने पूरी दुनिया को एक बहुत ही सुन्दर उपदेश दिया.....

**''अगर एक हारा हुआ इंसान, हारने के बाद भी मुस्कुरा दे,**
**तो जीतने वाला भी, जीत की खुशी को खो देता है।''**
**'ये है मुस्कान की ताकत'**



# कार्यालयीन गतिविधियाँ




हरियाली तीज के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया मुख्य अतिथि को पौधा भेंट करते हुए।




हरियाली तीज के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी।

# कार्यालयीन गतिविधियाँ



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया पुरस्कार प्रदान करते हुए।



हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया दीप प्रज्वलित करते हुए।

# कार्यालयीन गतिविधियाँ

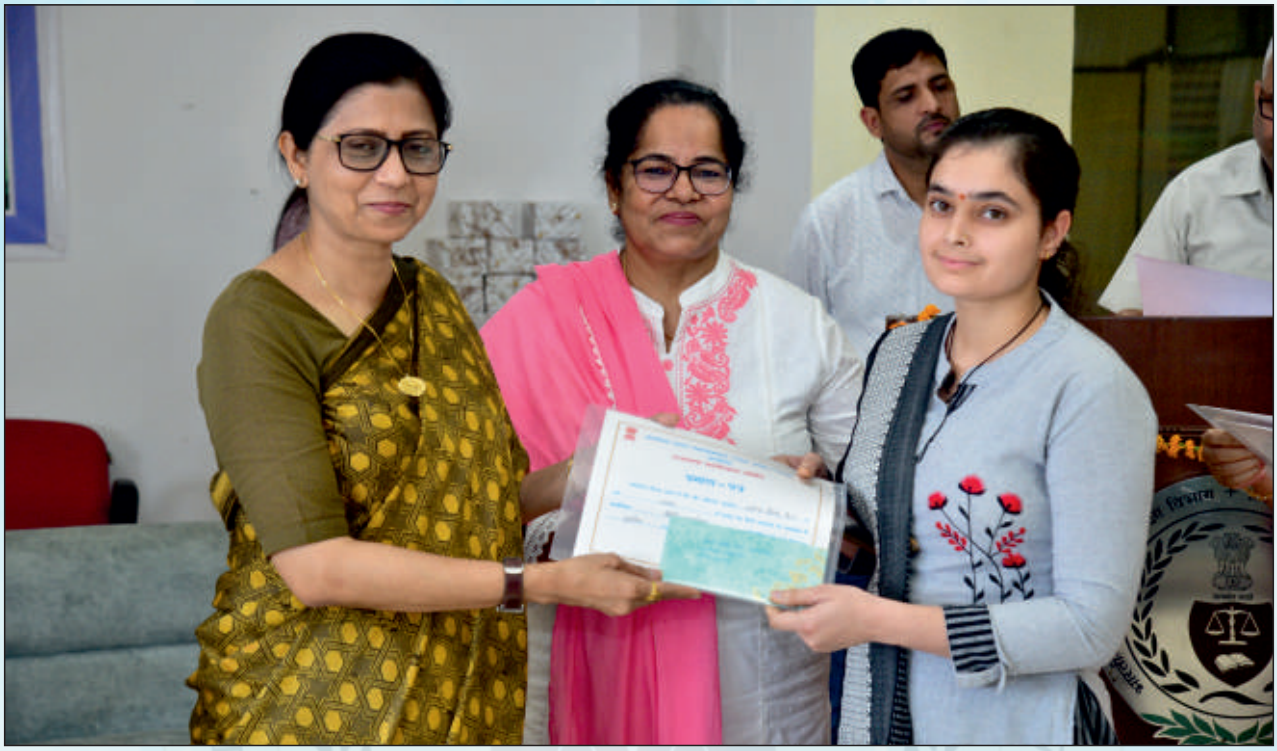



हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया पुरस्कार प्रदान करते हुए।




हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया विभागीय पत्रिका 'सुगंधा' का लोकार्पण करते हुए।

# कार्यालयीन गतिविधियाँ



हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया पुरस्कार प्रदान करते हुए।




नराकास द्वारा वर्ष 2023–24 के लिए 'सुगंधा' पत्रिका को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

# कार्यालयीन गतिविधियाँ



रक्तदान शिविर के दौरान रक्तदान करते हुए कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी।



अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी योग करते हुए।

# कविता

# हट गई टेंशन, लग गई पेंशन



कुलविन्दर सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

**"जो हंस कर बुलाए, उनके लिए दिल के, दरवाजे खोल देते हैं**
**जो अकड़ कर जाए, उनको दूर से हाथ जोड़ देते हैं**
**कुलविंदर फैसला करने की वकालत तुम क्या जानो**
**फिर खुदा के आने वाले वक्त पर, बात छोड़ देते हैं।"**

हट गई टेंशन लग गई पेंशन
भाई जी काम काज से वेहले हैं
यहां तक ऐसे नहीं आ गए, दुख बड़े ही झेले हैं।

मर्जी से अब उठना है, अब मर्जी से ही सोएंगे
घरवाली संग लगाके पोचे, इकठ्ठे कपड़े धोएंगे
अब तीर्थो पर स्नान करेंगे, मिलकर देखेंगे मेले हैं
यहां तक ऐसे नहीं आ गए, दुख बड़े ही झेले हैं
मुक गई टेंशन लग गई पेंशन, मैडम अब काम काज से वेहले हैं।

फायदे संग नुकसान बड़े हैं, घरवाली संग ही घूमेंगे
निगाह टीकाकार रखेगी, जब हम कहीं गुम हो गए
कैंटीन का खाना सपने जैसा, घर में खाएंगे जो बोए करेले हैं
यहां तक ऐसे नहीं आ गए, दुख बड़े ही झेले हैं
हट गई टेंशन लग गई पेंशन, भाई जी काम काज से वेहले हैं।

लेट आने के नए तरीके, काम हमारे ना आएंगे
बता देंगे और किसी को, बहाने अब ना लगाएंगे
पिंजरे जैसे कैद हुए रहना, जैसे कैदियों से बन्द पड़ी जेले हैं,,,,,,,,,,यहां तक ऐसे नहीं आ गए, दुख बड़े ही झेले हैं।

गलत बात ना किसी की सुननी, अच्छी चाहे कहीं से मिल जाए
खुद ही बूटे बोए गए, शायद कहीं फूल ही खिल जाए
उनसे तो हम दूर रहेंगे, जो पाखंडी बाबाओं के चेले हैं
यहां तक ऐसे नहीं आ गए, दुख बड़े ही झेले हैं
हट गई टेंशन लग गई पेंशन, भाई जी काम काज से वेहले हैं।

अब तो मोबाइल के चार्जर जैसे, घरवालों संग ही रहना है
कब, कहां, क्यूं है जाना, जाने से पहले कहना है
लंच टाईम पर याद आएंगे, जो ताश के पत्ते खेले हैं
यहां तक ऐसे नहीं आ गए, दुख बड़े ही झेले हैं
हट गई टेंशन लग गई पेंशन, भाई जी काम काज से वेहले हैं।

जब चलते टूर थे, घर से दूर थे, पता फाजिल्का कहां था
कभी गुरदासपुर कभी लुधियाना, रहना भी तो वहां था
रोटी बिना कई बार थे भूखे, याद आए जो खाए केले हैं
यहां तक ऐसे नहीं आ गए, दुख बड़े ही झेले हैं
हट गई टेंशन लग गई पेंशन, भाई जी काम काज से वेहले हैं।

टेंशन नहीं अब डबल ए.ओ. की, ना ए.ओ, ना डी.ए.जी.
घरवाली अब सब कुछ अपना, पी.ए.जी. और सी.ए.जी.
कुलविंदर अभी तो सफर बड़ा है, बुढ़ापा सिर पर आन खड़ा है
अब मालिक का नाम कमा ले, बहुत कमा लिए पैसे धेले हैं
यहां तक ऐसे नहीं आ गए, दुख बड़े ही झेले हैं
हट गई टेंशन लग गई पेंशन, भाई जी काम काज से वेहले हैं।

# मुख्यालय अधिकारी और मदहोशी का आलम



राजीव सूद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आओ साथियों आज तुम्हें मुख्यालय अधिकारी की अवस्था समझाता हूँ,

इसकी कार्यविधि के चंद लम्हों से आज तुम्हें अवगत करवाता हूँ।

मुख्यालय चलाने का कार्यभार जब अचानक मुझे पहली बार मिला,

कईयों के अचंभित सम्मान से चेहरा मेरा कुछ यूँ खिला।

वो जो ना कभी मुझसे कार्यालय में नजरें मिलाते थे,

आज खुद मेरे कक्ष में आकर अपनी उपस्थिति दर्शाते थे ।

इस पद ने थी खुलवाई कईयों के भीतर की सच्चाई,

देख ऐसी अवस्था मेरी भी मनोदशा थी चकराई।

मोबाइल/दूरभाष पर अब तो बातों का आगाज ही 'नमस्ते सर जी' से होने लगा,

ऐसा सुन मदहोशी के आलम में मैं खामखां ही खोने लगा।

कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी मेरे पास कुछ यूँ डोलने लगे,

जानो एक दूजे की पोलें ही मेरे आगे खोलने लगे।

अब तो अपनी लुगाई से भी करने लगा मैं सम्मान की आशा,

देख मेरा बदलता स्वरूप, इक दिन उसने यूँ समझाई इसकी परिभाषा।

एजी, इस A.G. दफ्तरी सुर में ना मुझसे बतियाओ तुम,

बिना किसी कारण के धौंस ना मुझे दिखाओ तुम।

फील्ड में भेजने की धमकी यहाँ ना मुझ पर चलेगी,

दफ्तरी दाल ना मेरे आगे कभी तुम्हारी गलेगी।

इस घमंड के नशे में तो गया था रावण भी हारा,

तुमने किस जोश में आकर है अपनी जोरू को ललकारा।

इस आलम को देख मेरा भी था सर चकराया,

बीवी के तेवर देख था मैं पूर्णतया घबराया।

खैर इस पद पर आ रहा गोलगप्पों के स्वाद वाला नजारा,

कभी महसूस हो रहा मीठा और कभी लग रहा करारा।

# किस्सा एक कार्यालय का



**गौरव बग्गा**
**सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी**

एक दफ्तर की बात है ये,
कार्यप्रणाली से मुलाक़ात है ये ।

सरकारी कर्मी जो जनहित में कार्य करते हैं,
खुद के मनोरंजन को सदा सर्वदा ही तरसते हैं ।

एक बार ना जाने कैसे कार्यप्रणाली ने बेचारों पर तरस खा कर, नीति एक बनाई,
"खेल एवं मनोरंजन" जैसी प्रबंधक समिति एक बनवाई ।

सबने सोचा, कार्यालय काम के साथ, मनोरंजन और खेलों का जुड़ाव होगा,
पर पहलू एक ये भी था अब,
कि "खेल एवं मनोरंजन" प्रबंधक समिति हेतु, कार्यालय कर्मियों के बीच ही चुनाव होगा ।

चुनाव तो घोषित किया जाता है,
एक दूसरे के विकास और जुड़ाव के लिये,
पर बात घूमी इस कदर,
कि चुनावी समय का पहिया, चल पड़ा बिखराव के लिये ।

सब कर्मी, जो कभी परस्पर एकता के बल जैसे थे,
चुनावी माहौल में वो अब राजनीतिक दल जैसे थे ।

किस्सा एक और नया अब शुरू हुआ,
लोक लुभावने वादों का दौर शुरू हुआ ।

दल निर्माण की अजब बात यह हुई,
जो बिना कभी एक दूसरे के साथ, जलपानगृह तक नहीं जाते थे,
चुनावी समय का फेर देख,एक दूसरे को अब फूटी आँख नहीं सुहाते थे।

चुनाव जैसे तैसे प्रचार स्तर को पार कर,
अगले पायदान पर पहुंचा,
आख़िर अब हर कर्मी, अपने हित हेतु
मतदान को पहुँचा ।

मतदान कक्ष में मतपत्र को देख, एक नव –नियुक्त कर्मी का सिर चकराया,

जब मतपत्र में उम्मीदवारों के नाम पाये पर, उसने NOTA का विकल्प ही नहीं पाया,
चुनाव की ये प्रक्रिया का खेल, उसको समझ नहीं आया।

कर्मी ने जब इस बात को, सहकर्मियों के समक्ष उठाया,
तब उस कर्मी को सारा हाल बताया।

कि..

चुनाव तो चुनाव होता है, प्रतिनिधित्व का ढंग होता है,
अरे भाई, कार्यालयी चुनाव का कहाँ राजनीतिक चुनाव जैसा रंग होता है,
रंग होता है।

# हिन्दी का सफरः एक अमर कहानी



अनूप पुनियाँ
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी का सफर है अनोखी बात,
संस्कृति की गाथा, मिट्टी की सौगात।
संस्कृत से जन्मी, सरल सी भाषा,
भारत के हर दिल की प्यारी आशा।

भक्ति के युग में बढ़ा ये मान,
सूर, तुलसी ने लिखे दिव्य गान।
कभी कबीर की दोहों में गूंजी,
तो मीरा की भक्ति से धरा पर सूजी।

राजा की सभा में जब गूंजे स्वर,
हिंदी ने लिखे तब इतिहास के घर।
ग्रंथों के पन्नों में छुपा था जो ज्ञान,
बनी वह धरोहर, लिया सबने मान।

किसानों के गीतों में रस घोलती,
मंदिर की घंटी सी सुर में डोलती।
पुराणों की भाषा, विज्ञान की भी जान,
हर युग में हिंदी ने पाया सम्मान।

संघर्ष का दौर भी आया था,
अंग्रेजी ने इसे दबाया था।
पर हिंदी ने साहस नहीं हारा,
हर भारतीय का बन गई सहारा।

आजादी के रण में थी जो साथी,
हिंदी ने जोड़ी हर मन की माटी।
गांधी के स्वप्न की यह आवाज,
हिंदी बनी आजादी की परवाज।

हिंदी का प्रश्न, स्वराज का प्रश्न,
गांधी जी का यह अद्भुत वचन।
हिंदी पढ़ें, हिंदी सिखाएँ,
लालबहादुर का संदेश अपनाएँ।

आजादी की भाषा, हिंदी का था जोर,
जन–जन को जोड़े, यह बनी थी उज्ज्वल पोर।
क्रांति के संग्राम में गूंजा इसका शोर,
संघर्ष का प्रतीक, हर दिल का था गौर।
एकता का संदेश, बढ़ाए नया दौर,
हिंदी से सजी थी स्वतंत्रता की डोर।

राजभाषा का दर्जा इसने पाया,
संविधान में स्थान बनाया।
छब्बीस जनवरी, आया सुखद दिन,
संविधान ने लिखा एक नवल चिन्ह।
अनुच्छेद तीन सौ तैंतालीस का मान,
हिंदी बनी भारत की पहचान।

हिंदी के विकास का दिया गया भार,
अनुच्छेद तीन सौ इक्यावन का था उद्गार।
संस्कृति के स्वर को करना उजागर,
हिंदी बने सबकी अभिव्यक्ति का आधार।

राजभाषा अधिनियम फिर आया,
साठ के दशक में कानून सजाया।
उन्नीस सौ छिहत्तर का नियम बना,
हिंदी का परचम हर दिशा तना।

अब युग बदला, स्वरुप बदल गया,
कागज से कंप्यूटर पर सफर चल गया।
हिंदी ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपनाया,
नए युग के उपकरणों से हाथ मिलाया।
मशीनों के कोड में अब इसकी आवाज गूंजी है,
डिजिटल दुनिया में भी यह ऊंची शिखर पर पूंजी है।
नए दौर का चेहरा, पुरानी रूह का वादा,
हिंदी का हर कदम, प्रगति का इरादा।

हिंदी का ए.आई. में बढ़ता कदम,
ज्ञान और तकनीक का बना संगम।
अक्षरों से अब कोड बने,
भाषा के संग भविष्य तने।
नेचुरल लैंग्वेज में लाई सुधार,
हिंदी ने खोले नवाचार के द्वार।
स्पीच से टेक्स्ट की नई उड़ान,
हर दिल तक पहुँचे इसका गान।

फिर भी सफर है लंबा और कठिन,
हिंदी को चाहिए हर दिल का छिन।
हर शब्द में हो इसका सम्मान,
हिंदी बढ़े और बने पहचान।

हिंदी की यात्रा है अनमोल और महान,
संस्कारों का संगम, इसका हर एक बयान।
हर कदम पर बढ़े इसका सम्मान,
हिंदी से ही होगी भारत की पहचान।



**''हिंदी भाषा को केवल संवाद का माध्यम कहना, स्वयं से और समाज की भावनाओं के साथ अन्याय करना जैसा होगा।''**

# एक प्रयास



मुकेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बदलाव की लहर में,
इंसान कितना बंट गया,
तरक्की की हवा ऐसी चली,
कि पेड़ नहीं जंगल कट गया।

चारों तरफ धूल है धुँआ है,
ये हवा को क्या हुआ है,
सूख रहा नदियों का पानी,
दरकने लगे पहाड़ हैं,
शायद ये विनाश की दहाड़ है,
इंसान प्रकृति से कैसे हट गया।

तरक्की की हवा ऐसी चली,
कि पेड़ नहीं जंगल कट गया।

मोबाईल के नशे में सारे सराबोर हैं,
नशे की दुनिया में सारे मतलब के यार हैं,
गुम हुई किताबें गुम हुआ अखबार है,
गुम हुआ रेडियो गुम हुआ टी. वी. है,
अब तो पहचान डाटा और जी. बी. है,
छोड़ सब कुछ इंसान किधर डट गया।

तरक्की की हवा ऐसी चली,
कि पेड़ नहीं जंगल कट गया।

प्रकृति ने दी बहुत सुंदर धरती है,
शीतल हवाएं जिस्मों में सांसे भरती हैं,
झरने नदियां अब भी कलकल करती हैं,
कुछ पेड़ लगा लो कुछ पानी बचा लो,
थोड़ा खुद संभलों थोड़ा सबको संभालो,
वरना मत कहना इतना सुंदर नजारा,
किस धुंध में छट गया।

तरक्की की हवा ऐसी चली,
कि पेड़ नहीं जंगल कट गया।



तुषार कांती सिन्हा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

## घूँट एक शराब की

घूँट ही घूँट में न जाने वो क्या–क्या पी गया,
पी गया अपना जुनून, पी गया माँ का सुकून।
पी गया पत्नी का प्यार, पी गया बच्चों का दुलार।
पी गया संस्कार, पी गया घर–बार।
पी गया बाप का मान, पी गया अपना सम्मान।
बर्फीली रात की सर्द पी गया, अपने अंदर का मर्द पी गया।
रफ्ता रफ्ता जाम की मय सर पर चढ़ती गई, जिंदगी की शाम ढलती गई।
ये था उसका दीवाना, वो थी इसकी दीवानी।
पी रहा था ये ललक से, पी रही थी वो हलक से।
पीने पिलाने के इस दौर में, खत्म हो गई जिंदगी की कहानी,
गले लग कर पी गई उसे अंगूर की रानी।



## मजदूरी के पैसे

पता नहीं कैसे हो तुम, मेहनतकश इंसान के पसीने जैसे हो तुम।
दो वक्त की रोटी हो तुम, गरीब की लँगोटी हो तुम,
बच्चे के दूध की कटोरी हो तुम, जिंदगी की कसौटी हो तुम,
रकम मोटी नहीं बहुत ही छोटी हो तुम।
मेहनत की कमाई हो तुम, बूढ़ी अम्मा की दवाई हो तुम,
बिटवा बिटिया की पढ़ाई हो तुम।
ईमान के बहुत करीब हो तुम, मेरा नसीब हो तुम, मेरे प्रिय के रकीब हो तुम,
न जाने कैसे कैसे हो तुम, मजदूरी के पैसे हो तुम।

# ये जन्म फिर से बेकार गया



धर्म सिंह मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ये जन्म फिर से बेकार गया , जिस जिस को चाहा उन सबको हार गया ।
ऐ खुदा! ये तकदीर बदलनी है, अब तो ये दिन, महीने क्या, ये साल भी बेकार गया ।
ये जन्म फिर से बेकार गया ।

करता हूँ बातें खुद से खुद को पाने की,
और ना जाने क्यूँ मैं अब खुद को भी हार गया,
ये जन्म फिर से बेकार गया ।

कोशिश की सबको पाने की, खुद को भी मैंने बहुत तैयार किया,
ना जाने फिर क्यूँ मैं सबको हार गया ।
ये जन्म फिर से बेकार गया ।

मंजिल की जगह ठोकरें मिली, रास्ते भी सुनसान मिले,
चाहा था मिलना भीड़ से, पर उन सब में मुझे सिर्फ व्यापार मिला
ये जन्म फिर से बेकार गया... ये जन्म फिर से बेकार गया।



# सरकारी कर्मचारी की व्यथा ग्रामीण परिवेश में



पायलेट मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जब गाँव ना जाए तो कुछ लोग बोलते हैं, नौकरी लगने के बाद घरवालों से मतलब नहीं रखता,
वहीं अगर एक महीना गांव में ठहर जाए तो बोलते हैं, नौकरी चली गयी।

जब गाँव में सुबह सैर करने निकल जाए तो बोलते हैं, इसको शुगर, बी.पी. की दिक्कत है,
वहीं अगर सुबह देर से जागते हैं तो बोलते हैं, कि नौकरी के बाद आलसी हो गया।

जब गाँव कार से जाए तो बोलते हैं, यह तो दिखावा करता है,
वहीं अगर ट्रेन से जाए तो बोलते हैं, कंजूसी करता है ।

जब बिना दहेज के शादी कर लेता है तो बोलते हैं, इनका तो पहले से चक्कर था ,
वहीं अगर शादी ना करे तो बोलते हैं, इसने तो वहीं कर ली होगी।

जब गाँव में जाके खेती नहीं करें तो बोलते हैं, नौकरी का घमंड आ गया,
अगर खेती करें तो बोलते हैं, इसका तो नौकरी से पेट नहीं भरता।

जब कभी गांव बीमार होकर जाए तो बोलते हैं, वहाँ का खानपान सही नहीं है,

मोटा होकर जाए तो बोलते हैं, फास्ट फूड खाता होगा
वहीं अगर दुबला–पतला होकर जाए तो बोलते हैं नशा करता होगा।

गांव में अच्छा घर नहीं बनाए तो बोलते हैं, सरकारी नौकरी में होने का क्या फायदा,
वहीं अगर अच्छा घर बना ले तो बोलते हैं फालतू में रुपए खर्च कर दिए इससे अच्छा तो शहर में बना लेता।

उसके बाल उड़ जाए तो बोलते हैं, इसका तो बुढ़ापा आ गया,
वहीं अगर दाढ़ी मूछ बढ़ा ले तो बोलते हैं ये तो बाबाजी बनेगा।

गांव में कुरितियों को बंद करने की कहने लगे तो बोलते हैं
ये आज कल की पीढ़ी सरकारी नौकरी क्या लग गई अपने रीति रिवाजों को भी नहीं मानते,
वहीं अगर कुछ ना बोले तो कहते हैं इसको तो गांव की भलाई से कोई मतलब नहीं है।

# दिल की कलम से



अवतार सिंह (तारी)
सहायक परिवेक्षक

जीत अक्सर उन्हीं की
हुआ करती है,
जो हार मानना
टालते चले जाते हैं।

मोहब्बत के इस बाजार में,
कहीं दिन तो कहीं अँधेरे हैं।
हमारे ख्वाब बहुत कीमती हैं,
ख्वाबों में वो आज भी मेरे हैं।

उनको भूलने की कोशिश,
अभी जारी थी, कम्बख्त,
दीदार–ऐ–यार ने फिर,
से सब हरा कर दिया।

फासले ऐसे भी होंगे,
सोचा ना था।
वो मेरे सामने हो कर भी,
पास ना होंगे सोचा न था।

मेरी जिंदगी एक किताब है,
तू इसका एक अनमोल,
पन्ना, कहाँ से लाऊं वो स्याही,
जो तेरे बिना एक शब्द भी दे बना।

ऐ मेरे परवरदिगार!
अपने बन्दे पर इतना तू रहम कर दे,
जिंदगी में वापिस ला दे उस शख्स को,
या ख्याल निकाल दे उसका मेरे जहन से।

बहुत आएँ या जाएँ जिंदगी में,
पर कोई एक शख्स इतना खास होता है।
कौन है वो, तुम्हारे दिल को,
जरूर ये एहसास होता है।
उसका आस पास होना,
कुछ तो दिल धड़का जाता है।

क्यों जाता है उस तरफ,
ये दिल,
जहां गमों के अंधेरे हैं।
अब भी लगता है,
इस नादान को,
कि वो आज भी मेरे हैं।

दुखों के अंधेरे हो जब,
कलम की स्याही से,
खूबसूरत फूल खिलते हैं।
ऐ मेरे दोस्त सच्चे मोती,
सदा गमों के सागर में ही मिलते हैं।

इतना हसीन चेहरा,
आँखों में समाया सागर है।
सब कुछ हार के अपना जाना,
हमने वो तो जख्मों के सौदागर हैं।

बारिश की बूंदों में,
मधुर सा संगीत सुन।
जिंदगी चलती रहेगी ऐ दोस्त !
हंसना है या रोना, ये तू खुद चुन।

फिर से कलम उठायी है,
दर्दे दिल कागज पर लाने को,
तेरे बिना क्या करें दुनिया का,
आग लगे जमाने को।



# पिता..

मानसी दुबे
सुपुत्री श्री प्रमोद कुमार दुबे
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)

है जरूरी जैसे सड़क किनारे पेड़ पथिक के लिए,
हो वैसे ही जरूरी आप मेरे लिए
बचाता है जैसे वो पथिक को सूरज की धूप से,
आप जीवन के संघर्षों की तपन से बचाते हो मुझे
कि शह में एक बड़े से दरख़्त के उगते हैं वो नन्हें पौधे जैसे,
आपकी शह में फलती फूलती हूं मैं भी बिल्कुल वैसे
हो जाता है आसान चढ़ना सीढ़ियां आगे की,
हो जब मन में गिरने का कोई डर नहीं
और हो भी क्यों जब जानती हूँ थामने को खड़े हो आप वहीं
दिखाते नहीं हो कई बार ये साया ये दुलार खुलकर
ताकि बनूं आजाद मैं
लेकिन हो हमेशा साथ आप है मालूम मुझे
बिना आपके जीवन की कल्पना मन मेरा कभी करता नहीं है
क्या करे बिना जड़ के खड़े किसी पेड़ को अब तक देखा नहीं है ।।

# कार्यालयीन समाचार
# कार्यालय में आयोजित की गई गतिविधियाँ

### फुटबाल कैंप

दिनांक 22.04.2024 से 27.04.2024 तक सेक्टर 42 स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स में फुटबॉल कैंप का आयोजन करवाया गया।

### कार्य स्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न पर सेमिनार

दिनांक 24.04.2024 को कार्य स्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के विषय पर सेमिनार का आयोजन करवाया गया।

### योग दिवस

सभी कर्मचारियों/अधिकारियों को कार्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य पर योग के लाभ बताये गए व योग करवाया गया।

### रक्तदान शिविर

कार्यालय द्वारा दिनांक 26.06.2024 को रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया।

### हरियाली तीज महोत्सव

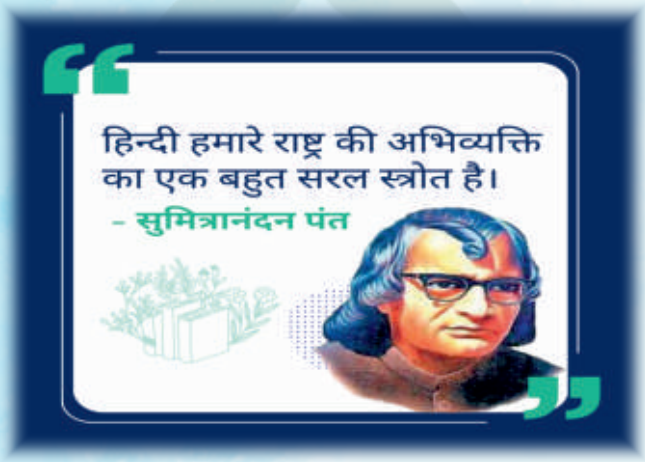
कार्यालय परिसर में हरियाली तीज के उपलक्ष्य में दिनांक 13.08.2024 को तीज उत्सव मनाया गया।

### स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम

कार्यालय के सभी अधिकारियो/कर्मचारियों की उपस्थिति में स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम का आयोजन करवाया गया। जिसमें प्रधान महालेखाकार महोदया के द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

### हिन्दी पखवाड़ा

कार्यालय में सितम्बर माह 2024 में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन करवाया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह में प्रधान महालेखाकार महोदया द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया ।



# सेवानिवृत्ति

समय अपनी गति से चलता रहता है। कार्यालय में जिन्हें हम अपना प्रेरणा स्त्रोत मानते हैं, जिनके सक्षम कार्यकलापों से हम बहुत कुछ सीखते हैं, जिन्हें प्रतिदिन देखते हैं, अचानक पता चलता है कि वे सेवानिवृत्त हो रहे हैं। उनका दीर्घ अनुभव व मार्ग दर्शन अब हमें प्राप्त नहीं होगा। तब उनके सुखी व स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए स्नेह व सम्मान के पुष्प अर्पित करके ही संतोष करना पड़ता है। ''सुगंधा'' परिवार इन महानुभावों की कार्यालय के प्रति की गई सेवा के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता है एवं उनके सुखी व समृद्ध जीवन की कामना करता है।

| क्रमांक | नाम (श्री/सुश्री) | पदनाम | सेवानिवृत्ति की तिथि |
|---|---|---|---|
| 1 | बलजीत सिंह | व.ले.प.अ.(वा.) | 30.04.2024 |
| 2 | सुरजीत कौर कालसी | व.ले.प.अ. | 31.05.2024 |
| 3 | अजमेर सिंह | सहायक पर्यवेक्षक | 31.05.2024 |
| 4 | तरसेम लाल | सहायक पर्यवेक्षक | 30.06.2024 |
| 5 | अमरजीत सिंह | एम.टी.एस. | 31.07.2024 |
| 6 | दिनेश कुमार–2 | व.ले.प.अ. | 31.08.2024 |
| 7 | बलबीर सिंह | सहायक पर्यवेक्षक | 31.08.2024 |
| 8 | राजिंदर सिंह–3 | व.ले.प.अ. | 31.08.2024 |
| 9 | प्रदीप कुमार | व.ले.प.अ. | 30.09.2024 |
| 10 | देविंदर कुमार वासेसी | पर्यवेक्षक | 30.09.2024 |

# श्रद्धांजलि

जन्म एवं मृत्यु सब विधि का विधान है। हमें बहुत दुख होता है जब विधि द्वारा बनाए विधान के अनुसार हमारे बीच से कोई अपना प्रिय काल का ग्रास बन जाता है।

हमारे कार्यालय के निम्नांकित साथी के असामयिक निधन की पीड़ा हमें गत वर्ष सहनी पड़ी। 'सुगंधा' परिवार दिवंगत साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परम पिता परमेश्वर से यह प्रार्थना करता है कि प्रभु उनकी आत्मा को चिर–शांति प्रदान करें तथा उनके परिवारजनों को विपदा की इस घड़ी में शक्ति प्रदान करें।

| क्र. सं. | नाम (श्री/सुश्री) | पदनाम | देहावसान की तिथि |
|---|---|---|---|
| 1. | लेखराज मीना | स.ले.प.अ. | 11.08.2024 |

# ध्वजारोहण



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया ध्वजारोहण करते हुए ।



# सुखना झील, चण्डीगढ़

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest


राजभाषा कार्यान्वयन समिति

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

पंजाब, चण्डीगढ़ - 160017